हँसौनी

लक्की चौधरी

प्रकाशक

HamarPahura

हँसौनी (चुट्किला)

कृतिकार : लक्की चौधरी

संस्करण	:	पहिल २०७२ चैत
प्रति	:	२००० प्रति
पृष्ठ संख्या	:	११४+६
प्रकाशन सहयोगी	:	हमार पहुरा डट कम
सर्वाधिकार	:	लेखकमे सुरक्षित
आवरण डिजाइन	:	केशव खनाल (वरिष्ठ कार्टुनिष्ट)
लेआउट	:	केदार अधिकारी ९८५१०७२११६
मूल्य	:	१५०।-
ISBN	:	978-9937-0-0631-6

Hansauni
(A Tharu Jokes Anthology)
By Lucky Chaudhary

मोर कहाई

'हँसौनी' अर्थात् 'चुटकिला' के थारू शब्दकोषमे कौनो पर्यायवाची शब्द नै हो । चुट्किलाहे थारू भाषामे का शब्दसे सम्बोधन कर्ना हो ? थारू भाषाविज्ञ हुक्रे आभिन अलमलमे बातैं । चुट्किलाहे थारूमे 'हँसौनी' कना हो कि, 'खिस्सा' कना हो कि, 'चुट्का', 'चुट्कुला' कना हो कि, 'हाँसीमजाक' कना हो कि, 'चटनी' या का शब्द सृजैना हो ? बरा कर्ा परल । दुईचार थो शब्दहे उच्चारण कैके नाउँ दिहे खोजगिल । मने चित्तबुझ्दो नै हुइल । कारण, यी चुट्किलाहे आभिन थारूभाषामे लावा शब्द नै सृजागिल हो । तवमारे शुरूमे सृजाइल शब्दके उच्चारण करेबेर अन्ख्वाहर लग्ना स्वाभाविक हो ।

नेपाली शब्दकोषमे चुटकिलाके अर्थ चुट्का हुइल, छोट ओ तिक्खर खालके, घटलग्ना, चुटकिला कहिके अर्थ्यैले बा । मने थारू शब्दकोषमे चुटकिला शब्दके

अर्थ त कहाँ यी शब्दफे फेला पारे नैसेकगिल । तवमारे 'चुटकिला' थारू शब्द नै हो कना पुष्टि हुइथ् । मने यकर सामानार्थी शब्द का हुइसेकी ? सृजैनाफे लिरौसी काम नै हो । यी शब्दके सृजना कराइकलाग कृति मार्फत् थारू विज्ञहुक्रनके माझ बहस शुरूकरे जाइतुँ । हुइसेकथ्, हमार समाजमे यी शब्दके सृजना होसेकल हो । खोजविनके अभाव ओ लेखकके बुद्धिके पहुँचसे दूरफे हुइसेकी । यदि ओइसिन हो कलसे अपने पाठक मध्ये कोइ ना कोइ विद्वान त सुझाव देवे कर्बी ।

कोइ-कोइ चुटकिलाके अर्थ 'खिस्सा' हो कहिके फे सुझाव देलैं । कोई चुटकिलाके अर्थ थारूभाषा साहित्यमे नै हो कहलैं । चुटकिला आयातित् शब्द हो कनाफे सुझैलैं । मने थारू शब्दकोषमे 'खिस्सा' के अर्थ 'कथा, कहानी' जो लिखगैल बा । नेपाली शब्दकोषमे हाँस्यौली, ख्यालठट्टा, हँस्सीमजा, हँस्सीमजाक ओ अंग्रेजीमे 'जोक' 'फनी स्टोरी' कहिके चुटकिलाहे अर्थ्यागिल बा ।

चुट्किलाहे थारूमे का कहना हो ? कहिके यी पङ्क्तिकार थारू शब्दकोषके लेखक अशोक थारू, गोपाल दहित, साहित्यकार सुशील चौधरी, विश्व पछल्डंग्या, कृष्णराज सर्वहारी, छविलाल कोपिला, शत्रुघन चौधरी, सोम डेमनडौरा, फनिश्याम थारू, लेखक दिलबहादुर चौधरी, अकेला थारू, सन्तकुमार थारू, कारी महतो, अविनाश, प्रेम, राम दहित लगायतसे सुझाव मागल

रहे । सामाजिक सञ्जालमे चुटकिला शब्दके थारू नाउँके सार्वजनिक आव्हान् कैगिल रहे । मने ठोकुवा कैके चुटकिलाके अर्थ कहुँसे नै आइसेकल । बहुत जनहनसे चुटकिलाके दोसर शब्द थारूमे नैरहल सुझावफे आइल । बहुत थारू शब्दफे अंग्रेजी, नेपाली, संस्कृत, हिन्दी, भोजपुरी, अवधी ओ मैथिलि भाषासे आयातित् बा । तबमारे यकर अर्थ ठोकुवा कैके बतैना फे मुश्किल हुइल ।

सामाजिक सञ्जालमे करल मागअनुसार कैयौंजे पूरूव ओ पश्छिउँके शब्दमे सुझाव देलैं । सुझावमे कहकुट, बटकोही, खिस्सा, फोकरा, फकरा, कुथनी, चट्नी लगायतके शब्दावलीके सुझाव आइल । मने ठेट थारू शब्दमे चुटकिलाके शब्दावली फेला नैपरल । तवमारे यी शब्द सृजैना बाहेक औरे विकल्प नै रहल । मै यी संग्रहके नाउँ 'हँसौनी' रख्ना निर्णयमे पुग्नु । कृति प्रकाशन पाछे सही शब्दावली फेला परी कलसे अइना संस्करणमे उहीहे स्थान देना प्रयास कैजाई ।

मने, का चुट्किलाके थारू शब्द खोजी कर्ना हमार काम नै हो ? शब्द बा कलसे खोजी करे परल । नै हो, कलसे लावा सृजाई परल । यिहे सोचके पङ्क्तिकार थारू भाषाके चुटकिला-संग्रह प्रकाशन कर्ना जमर्को करल । यिहीसे आघे थारू भाषाके पत्रपत्रिका, म्यागेजिन, अखबारमे छिटपुट थारू भाषक् चुट्किला प्रकाशन हुइलसेफे यकर थारू नामाकरण हुइल नै देखगिल । चुटकिला शीर्षक राखके चुट्का राखल देखगिल । यिहीसे आघे सम्भवतः

थारू भाषामे कौनो चुटकिला-संग्रह प्रकाशन नै हुइल हो । तबमारे फे यकर थारू शब्द फेलापर्ना कर्रा हुइल ।

चुट्किलाहे बहुत जनहनके सिफारिसअनुसार 'हँसौनी' पर्यायवाची शब्द रख्ना सुझावअनुसार यी संग्रहहे हँसौनी-संग्रह नाउँ देगिल बा । प्रबुद्ध ओ विद्वान पाठक हुक्रन्थे चुटकिलाके थारू नाउँके विषयमे अइना दिनमे थप सुझाव जरूर आई । थारूमे चुट्किलाहे का कहिके सम्बोधन कर्ना, का नाउँ देना अथवा का शब्द सृजैना ? अपने पाठक लोगनके जिम्मा छोरतुँ । यहाँ हुक्रनके उपयुक्त सुझाव आई कलसे, दोसर संग्रहमे सच्यैना प्रतिवद्धता व्यक्त करतुँ ।

अन्त्यमे, थारू भाषक् हँसौनी संग्रह प्रकाशनके लाग रचनात्मक सुझाव ओ सहयोग करूइया हमारपहुराडटकम के प्रबन्धक रामलाल चौधरी, धर्मपत्नी गीता चौधरी, सुपुत्र आकाश चौधरी, आवरण डिजाइन करूइया केशवराज खनाल, कम्प्युटर लेआउट करूइया केदार अधिकारी सहित सक्कु मैगर गोचागोचीनहे धन्यवाद देहतुँ ।

लक्की चौधरी

दिनाङ्क : २०७२ फागुन २० ।

सोहन जागीरके लाग एक्थो कार्यालयमे अन्तरवार्ता देहे गैल रहथ् । ओकर तयारी कुछु नै रथिस् । भित्रेभित्रे डराईथ् । सुशील जब अन्तरवार्ता देके हकिम्वक् कोठम्से बाहर निक्रथ् । सोहन पुछथ् -

सोहन : सुशील जी ! का का पुछल ?

सुशील : नेपालके प्रधानमन्त्री के हो ? मै कनुँ केपी शर्मा ओली । नेपालमे गणतन्त्र कहिया आइल ? प्रयास त बहुत आघेसे हुइल हो मने, २०६५ साल जेठमे । चन्द्रमामे मनै बातैं ? वैज्ञानिकलोग ओस्तहँ कथैं, मने अनुसन्धान हुइती बा ।

सोहन अन्तरवार्ता देहे भित्तर छिरथ् । प्रश्न विन ध्यानदेले उत्तर किल याद करके जाइथ् ।

हकिम्वाः त्वहार नाउँ का हो ?

सोहन : केपी शर्मा ओली

हकिम्वाः कहिया जन्मलो ?

सोहन : प्रयास त पहिलेसे हुइल रहे मने २०६५ साल जेठमे ।

हकिम्वाः तुँ पागल त नै बातो ?

सोहनः वैज्ञानिकलोग ओस्तहँ कथैं, मने अनुसन्धान हुइती बा ।

हकिम्वा अक्क न बक्क ।

एक्थो अमेरिकन टुरिष्ट नेपालके भ्रमण करे आइल रहथ् । काठमाडौंसे गाउँओर एक्थो नेपाली संघरियाहे लेके घुमे जाइथ् । जैतीजैती चित्तवन नेशनल पार्कमे पुगथ् । उहीहे बरा हेगास लग्थिस् । बनुवामे शौचालय ओ पानीके व्यवस्था हुइना बाते नै हुइल । सडक छेउमे गारी रोकके दौड्ती जाके झरकट्टा तरे बैठजाइथ् । हेगके सेकके आघे रहल हरियर सिस्नुक् पत्ता टुरके दिशा पोछथ् । एक्चो पोछथ् ते ओत्रा सफा नै हुइथिस् । फेन मुट्ठाभर टुरके पोछथ् । जब पैन्ट लगाइथ् तव ओकर चुत्तर झर्नाहस् करे लग्थीस् । चुत्तर थथैती गाडीओर जाइथ् । उहीहे छटपटाइत् देखके नेपाली पुछथ्

नेपालीः का हुइल संघारी ?

अमेरिकनः अरे यहाँ नेपालके त पत्ता पत्तामे करेन्ट बा ।

नेपाली : नेपाल जैसिन गरिब देशमे का रही हो । खै कहाँ बा ?

अमेरिकनः नेपाल गरिब नै हो, मै दिशा करके दिशा पोछ्नु त करेन्ट लागके आभिन झट्का लग्ति बा ।

नेपाली मुसुमुसु हँस्ती बुझलमे नैबुझलहस् करथ् ।

गरिबदास भगवान शीवके तपस्यामे महिना दिनसे लिन हुइल रहथ् । हुँकार तपस्यासे खुशी होके एकदिन भगवान शीव प्रकट हुइथैं ओ कथैं -

शिव : गरिबदास मै त्वहार तपस्यासे खुशी हुइनु । मागो का बर मग्बो ?

गरिबदास : भगवान्के कृपासे मोरथिन सबचिज बा । खाइपिए मजासे पुगल बा । मने आभिनसम एकजोर सुट किने नै सेक्ले हुँ भगवान । महिहे सुन्दर सुटके व्यवस्था कैदेहे परल प्रभो ।

शिव : गरिबदासके बातसे चूर हुइती कथैं - ओ गरिबदास ! महिन काकरे हेपतो ? आपन लुगा नै होके त मै सद्दभर बाघके छाला लगाके आङ् छोथ्युँ । मै तुहिनहे कहाँसे लानके सुट दिउँ ?

गरिबदास अक्क न बक्क ।

मोटु आपन जिन्दगीसे दिक्क हुइल रहथ् । गणेश भगवानके पूजापाठ करत् लम्मा समय वितल रथिस् । महिना दिनसे भगवान गणेशके तपस्यामे बैठल रहथ् । ओकर तपस्यासे खुशी होके गणेश भगवान प्रकट हुइँथैं ।

गणेश : मोटु ! मै त्वहार तपस्यासे प्रसन्न हुइनुँ, कहो का समस्या बा ?

मोटु : मै बहुत गरिब बातुँ भगवान । महिनहे धनवान बनादेहे परल । गणेश उहीहे धनवान बनादेथैं ।

कुछ दिनपाछे फेन मोटु तपस्यामे बैठजाइथ् । फेन गणेश प्रकट हुइथैं ।

गणेश : मोटु ! आब का समस्या हुइल कहो ?

मोटु : मोरथन प्रशस्त सम्पत्ति बा भगवान । तर बैठ्ना घर नै हो । मजा विल्डिङ चाहल । गणेश भगवान तथास्तु कहती ओकर जग्गामे सिंहदरवारजत्रा घर तयार कैदेथैं ।

मोटु फेन सन्तुष्ट नैहुइथ् । कुछ दिनपाछे फेन तपस्यामे बैठजाइथ् । फेन गणेश प्रकट हुइथैं ।

गणेश : आब फेन का चाहल मोटु ?

मोटु : भगवान् ! मोरथिन घर, सम्पत्ति सबचिज बा । मने यहोर ओहेर जैना एक्थो सुन्दर गाडी नै हो । महीहे आधुनिक एक्थो गाडी देहे परल ।

ओकर बात सुनके गणेश रिससे चूर हुइथैं ।

गणेश : मै त गाडी नैपाके मुसवक् सहारामे यहोर ओहर जैथूँ । तुँहीहे सुन्दर गाडी कहाँसे दिउँ ? मोटु अक्क न बक्क ।

एक्थो मनैयक सम्धी आपन लावा सम्ध्यान घर पहुनी खाइ गैल रथैं । घरक् मनैफे लावा सम्धी पहिलचो पहुनी खाइ आइल बातैं कहिके खोव मर्जाद कराके लोकल मुर्घीक् शिकार सँगे खाना देथैं । ओइनके घरम् एक्थो करिया कुक्रा रथिन् । जब पहुनाहे खाना देथैं । कुक्रा पन्जरे जाके बैठजाइथ् । पहुना जै कौरा भात मुहमे दारथ् । तै चो कुक्रा भुँकट् । पहुना सोचथ् सायद भुँख लागल हुइहिस् कहिके एक कौरा भात दारदेहथ् । तौनफे कुक्रा भुँके नै छोरथ् ।

पहुना : यी कुक्रा काकरे मै कौरा उठैती किल भुँकता ?

सम्धी : ओकर भाँरामे कोई भात खाइल देखके कुक्रा भुँकत् । तवमारे भुँकल हुई सम्धी ।

पहुना अक्क न बक्क ।

दुईथो मछियन् (झिंगा) के एकापसमे बात चल्थिन् । एक्थो मछिया बरा मोट रहथ् । दोसर जुन बरा डोंगिल । डोंगिल मछिया मोटु मछियाहे पुछथ् :

डोंङला मछियाः अपने कैसिक अत्रा ठुल्ह बाती हजुर ? तरिका त सिखादेवी ।

मोटु मछियाः मोर घरक मलिक्वा जब भात खाइ लागथ् । ओहे बेला मै तथियक् दालमे जाके बैठथुँ । मलिक्वाहे रिस लग्थीस् । तथियक् भात छोर देहथ् । तब मै ओहे दाल भात खाके मोटाइल बातुँ ।

डोंङला : मै फे आपन मलिक्वक भातमे जाके बैठ्थुँ । लेकिन महिहे त पौँछके मलिक्वा फेका देथैं । दालभात खाइ नैदेथैं ।

मोट्वा : त्वहार मलिक्वा कन्जुस बातैं । छारा करके मोर मल्कान घर आऊ ना त ।

डोंङला परथ् अचम्म ।

गौरव लौण्डा स्कूलके गृहकार्य बिनकर्ले विद्यालय जाइथ् । कक्षा कोठामे जब मस्तर्वा कापी चेक करे लागथ् तब उहीहे छटपटी हुइथिस् । मस्तर्वा गौरवसे कापी मग्थिस् । ऊ कापी देहथ् ।

मस्तर्वा : गौरव ! खै त त्वहार गृहकार्य ? कहाँ लिख्ले बातो ?

गौरव : सर ! मै बिस्रा मर्नु ।

मस्तर्वा : बिस्रा मर्नु कहिके छुट्टिमिली ? हात थापो कहती उहीहे डष्टरले चट्का देहथ् ।

घरे पुगके गौरब आपन बाबाहे चिब्ली खाइथ् -

गौरव : बाबा ! आज मस्तर्वा महिन पिटल । डष्टरले मोर हात लाल बना देहल ।

बाबा : जात्तीक ! हात हेर्ती ओकर बाबा कहथैं तबते कक्षामे रूइल हुइबो ना ?

गौरव : कहाँ रूइम् । मस्तर्वा पिट्के सेक्तीकि छुट्टीके घण्टी बजगिल । रूइनाफे समय नै मिलल ।

छावक बात सुनके बाबा अचम्म ।

घुम्ना रोजदिन धुरीम् खेलत ओ कुछ खोजत् । ओकर दाई जबफे तैं बाबक नाउँ धुरीम् मिलादेले कहिके गरियैथिस् । ऊ पढ्ना लिख्ना छोरके रोजदिन धुरीम् खेलत । ओकर गतिविधि देखके एकदिन बाबा पुछ्थिस् -

बाबा : छावा ! घुम्ना । धुरीम् का करे रोजदिन खेल्थे ? का खोज्थे ?

घुम्ना : बाबा ! मै त्वहार नाउँ खोजतुँ ? धुरीमे ।

बाबा : मोर नाउँ काकरे धुरीम् खोज्थे त ?

घुम्ना : दाई त रोजदिन गरियाइथ् । कहथ् - छावा तैं आपन बाबक् नाउँ धुरीम् मिलादेले ।

घुम्नक् बात सुनके बाबा अचम्म ।

सुशील एस.एल.सी. परीक्षामे ९५ प्रतिशत अङ्क लानके पास हुइथ् । ओकर बाबा बरवार व्यापारी रथिस् । बरा खुशी होके दौड्ती एक किलो मिठाई लेके ऊ बाबक् दोकानमे जाइथ् । खुशी हुइती बाबाहे कहथ्

सुशील : बाबा ! लेऊ यी मिठाई खाऊ ।

बाबा : का खुशीमे हो छावा ! यी मिठाई ?

सुशील : मै एस.एल.सी.मे पास हुइनु ।

बाबा : कत्रा अङ्क लानके पास हुइले ?

सुशील : १०० पूर्णाङ्कमे ९५ प्रतिशत लन्नु ।

बाबा : (रिसैती) मैं १०० रूपियाके सामानमे ५० रूपिया फाइदा खाके १५० मे बेच्थुँ । तैं पाँच अङ्क घाटा खाके ९५ नम्बर किल लन्ले ?

बाबक् बात सुनके सुशील अक्क न बक्क ।

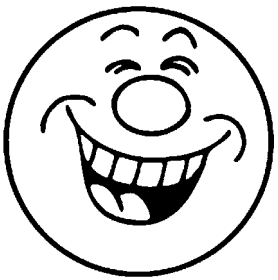

एक्थो मतोह्निया मनैया रातके दोकानसे दारू पिके आइतहे । ओकर घर पुग्ना पाँच मिनेट समय लग्थिस् । घर जैतीरहल बेला झमझम झमझम् पानी परे लागथ् । बद्री चिमचिम चिमचिम चम्कथ् । एक घचिमे डगरा जिलबुल होजाइथ् । मतोह्निया रपत्के दौंकसे गिरपरथ् । फेन बद्री चम्कथ् ।

मतोह्नियाः (रिसैती) हत्तेरी भगन्वा ! एक त महिन दौंकसे गिरादेलो । उल्टे मोर फोटुफे खिचलेलो ?

३० वर्षे गोपालके दुईथो जन्नी रथिस् । १० वरष पहिले मीनासे भोज कर्ले रहे । ओकर तरफसे एकथो छाई रथिस् । १० वरष पाछे छावा जन्मैना आसमे टीकासे फेन प्रेम भोज करथ् । उमेर छोट रलसेफे ओकर कपारीक् भुत्ला आधा पाकल आधा करिया रथिस् । दुनु जनेवन्के बीचमे विस्तारे झग्रा शुरू हुइथिन् । भोज करल कुछ महिनापाछे गोपालके संघरिया हरि पुछ्थैं -

हरि : गोपाल ! एक महिना आघे त त्वहार कपारीम जमजमाइल भुत्ला रहे । आज काहे सक्कु उँखरगिल ?

गोपालः खुइलल् कपार सुँहरैती कहथ् - अरे का कहुँ संघारी । दोसर भोज करलके करामत हो यी ।

हरि : कैसिन् करामत ? का हुइल जे ?

गोपालः बर्की जन्नी महिनहे बुह्वाइल देखाइकलाग करिया भुत्ला उँखारल । छोटकी जन्नी महिनहे जवान देखाइकलाग सक्कु पाकल भुत्ला उँखारल । कपारीम रहल सक्कु भुत्ला खुरूक्गिल ।

हरि अक्क न बक्क ।

अमेरिका, चीन ओ नेपालके प्रधानमन्त्रीन्के बैठक काठमाडौंमे रथिन् । गफेगफमे तीनुजाने प्रधानमन्त्री आपन आपन देशके प्रगतिके बारेमे गफ मर्थे :

अमेरिकी प्रधानमन्त्री : हमार देशके मनै बद्री छुना जहाज बनैले बतैं ।

नेपाल ओ चीनके प्रधानमन्त्री अचम्म मन्ती कथैं - बद्री छुना जहाज ? अमेरिकन प्रधानमन्त्री फेन कथैं - नाई नाई, बद्रीसे थोरा तरेसम पुगथ् ।

पाला अइथिस् चीनके प्रधानमन्त्रीके । ऊ सोचत् ओ फट्टसे कहिदेहथ् :

चीनिया प्रधानमन्त्रीः हमार देशके मनै उलरके जोनुमामा छु देथैं । हुँकार बात सुनके अमेरिकी ओ नेपाली प्रधानमन्त्री अचम्म पर्ती कथैं - ओहो ! उलरके जोनुमामा छुथैं ? चीनिया प्रधानमन्त्री कहथैं - नाई, नाई, जोनुमामासे थोरा

तरेसम ।

पाला अइथिन् नेपाली प्रधानमन्त्रीके। सोचमे परजिथैं । का कहुँ का कहुँ । एक घचिकमे हुँकार दिमाग फुर्थिन् :

नेपाली प्रधानमन्त्रीः हमार देशके मनै त नाकले भात खैथैं । हुँकार बात सुनके अमेरिकन ओ चीनिया दुनु प्रधानमन्त्री चौंक पर्थे । ओइने पुछथैं - जात्तिक नाकेसे खैथैं ? तब नेपाली प्रधानमन्त्री कहथैं - नाई, थोरा तरेसे ।

एक्थो चोर्वाहे रातारात धनी बन्ना मन लग्थीस् । रातभर नै सुतके कैसिक् धनी बन्ना हो कहिके कल्पना करथ् । ओकर दिमागमे अइथिस् कि एक्थो नक्कली हतियार बनाके बैंक लुटे जाइपरल । ऊ कठ्वक बन्दुक बनाके एक्थो बैंकमे चलदेहथ् । नक्कली बन्दुक देखाके बैंकके करोडौं पैसा त लुटथ् । संगे क्यासियरहे फे अपहरण करके लैजाइथ् ।

क्यासियर : अरे अपने पैसा त लुट्ली लुटली महिन हे काकरे अपहरण कर्ली ?

चोर्वा : ओकर बात सुनके चोर्वा कहथ् - अत्रा धिउर पैसा का तोर बाप गनी ?

एक्थो भिखारी हरेक दिन पसलमे आके भिख मागथ् । सद्द दिन उहीहे भिख देके दोकनदर्वा फे मिच्छाजाइथ् । पहिल दिन १० रूपिया देहथ् । दोसर दिन ५ रूपिया देहथ् । तेसर दिन २ रूपिया देहथ् । चौथा दिन त एक रूपियाके सिक्का कमण्डलमे दारदेहथ् । जब पँचुवा दिन फेन मागे जाइथ् -

भिखारी : मालिक गरिबके नाउँमे भिख दैदेऊ ।

पसले : तुँहिनहे लाज नै लागथ् ? हरेक दिन आके ऐसिक सडकमे भिख मागेबेरे ?

भिखारी : अरे का करूँ त ? त्वहार एक रूप्पल्लीक् भीखके लाग कार्यालय खोलके बैथुँ त ?

पसले अक्क न बक्क ।

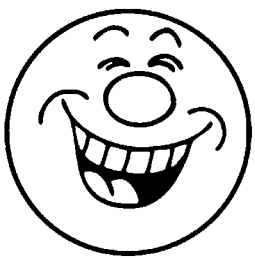

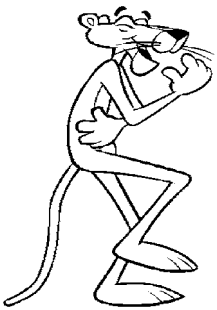

एक दिन तिलुवा होटलमे कोक पिय गैलरहथ । होटलमे जुन एकथो बथिनिया 'कीस मी' लिखल भेष्ट घालके बैठल रहथ । ऊ देखके तिलुवा जाके बथिनियक गालमे एकचो चुम्मा खा देहथ् । तबजाके कोक खाईथ् ते कोकाकोलाके बिरचीन मे जुन 'ट्राइ अगेन' Try Again लिखल पाइथ् । ऊ सोचमे परजाइथ् । Try Again लिखल बा एकचो और जाईक परल । तबजाके एकचो और चुम्मा खादेहथ् । बथिनियाहे रिस उठ्थीस् । ऊ बथिनिया तिलुवक गालहे थप्पडसे जोख देथिस । तिलुवा गाल सुहरैती भकवाईलहस हेर्ती रहीजाईथ् ।

एक्थो होटलमे अमेरिकन ओ नेपाली ठण्डा खाई जैथैं । होटलहुवा अमेरिकनहे फेन्टा ओ नेपालीहे कोक पत्राइथ् । दुनुजाने खोब मीठ मानके पिथैं । खाके सेक्थैं तव होटलहुवा अमेरिकनसे कैसिन बा ठण्डा कहथ् ? तव अमेरिकन फेन्टाष्टिक कहथ् । अमेरिकनहे फेन्टाष्टिक कहथ् सुनके दोसर नेपाली सोचथ् ऊ फेन्टा खाइल त फेन्टाष्टिक कहल मै कोकखैनु पक्कैफे कोकाष्टिक कहेपरी । नेपालीक् पाला अइथिस् त कहिदेहथ् चिसो एकदम कोकाष्टिक रहे । अमेरिकन ओ होटलहुवा कवाजिथैं ।

एकदिन भारतीय चर्चित अभिनेता शाहरूख खान ओ अण्डर ग्राउण्डके डन ओसामाविन लादेनके काठमाण्डौमे भेट हुईथिन् । शाहरूखहे देखके ओसामाविन लादेन कहथैं -

लादेन : का खबर बा हो शाहरूख जी ?

शाहरूख : कभी खुशी कभी गम । अनि त्वहार का बा खवर ?

लादेन : कभी गोली, कभी बम । ..... ।

एक्थो गाउँले मनैया रेडियोसे खवर सुनत् - औलो रोगसे बचकलाग सद्दभर झुलतिर सुती । ऊ ठिक्के ओहेबेला औलो रोगके विमारफे रहथ् । बरा सहजे तरिका जानलहस ऊ करथ् । रातदिन झुल लगाके पुष महिनक् जारमेफे सुतथ् । दिनके घाममे बाहर सुतेबेरफे झुल लगाके सुतथ् । उहीहे रातदिन झुलतिर सुतथ् देखके एक्थो मनैया अचम्म मन्ती पुछथ् - अरे दादु ! का करे अपने रात दिन झुल लगाके सुत्थी ? ऊ जवाफ देहथ् - का करे सुत्बी । रोजदिन रेडियोमे कहत् नैसुन्थी - औलो रोगसे बचकलाग झुलतरे सुती कहिके । विना पैसा खर्चकर्ले झुल तरे सुतके रोग ठीक होजाई कलसे कौन ससरा अस्पतालमे जाके बेकारमे रूपिया खर्च करी ? मनैया अक्क न बक्क ।

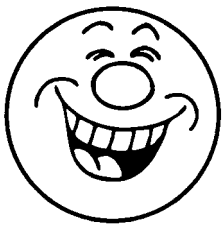

विसनपुर गाउँमे एक्थो पग्ला बैथत् । एकदिन ऊ काठीकरे बनुवा जाइथ् । बनुवामे घाम लागल ठाउँमे एक घण्टासम बैथके आराम करथ् । ओकर कुरहार एकदम तातुल होजिथिस् । ऊ सोंचत् कुर्हारहे जुरी आइल बातिस् । मनमने सोच्ती ऊ विन काठी कर्ले घरओर चलदेहथ् । जैती जैती घर पुग्नासे पहिले पानी परदेहथ् । कुरहार त बरा जूर होजाइथ् । पगला सोंचत जुरी ठीक होगिलिस कुरहारके । उहीहे लग्थीस् पानीमे भिज्लसे जुरी ठीक हुईथ् । घरे जाइथ् त ओकर दाई विमार रथिस् । जुरी आके दाईक् कपार तातुल देखके ऊ लग्गेक लदियामे लैजाके खोव डुवाइथ् ।

दाई : अरे का कराइते छावा ?

पगला : अब्बे एक घचिक रूक दाई । तोर जुरी सब ठीक होजाई ?

विमार दाई भन विमार होजिथिस् ।

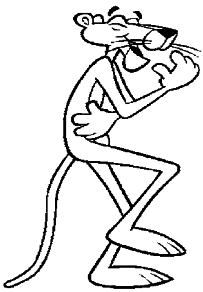

सुरेन्द्र आपन मनरख्नी दियाहे घुमाई लैगिल रहथ् । घुम्ती घुम्ती डगरीम मन्दिर आजाईथ् । दुनुजाने सल्लाह कर्थै, मन्दिर भित्तर घुमेजाई कहिके । मन्दिरके गेटमे पुग्तीकि सूचना लिखल देख्थै । सूचनामे 'नशालु चिजहे भित्तर लैजिना सख्त मनाही बा' ककिहे लिखल रहथ् ।

सुरेन्द्र : दिया तुँ गेटमे रूको मै भित्तर जाइतुँ ।

दिया : मै काकरे गेटमे रूँकुँ ?

सुरेन्द्र : तुँ बरा नशालु बातो तबमारे ।

दिया : मै कैसिक नशालु बातुँ ?

सुरेन्द्र : तुहिन देख्तीकि महिन नशा चढजाइथ्, तवमारे ।

सुरेन्द्रके बात सुनके दिया अक्क न बक्क होजिथी ।

महेश गौरापर्वक् राम हेरे बजार आइल रहे । चारूओर खुशीयाली ओ रमझम रहे । मनैनके मारे अपने मनै चिहन्नाफे कर्रा रहे । ओहेबेला महेश ललिताहे बोलकर्ती कहल् -

महेश : ऐ कविता मोर जन्नी, त्वहार थरूवा हम्रे संगे काठमाण्डौं गैल रही चिहन्लो ?

ललिता : विन बोल्ले महेशके गालम बजा देहथ् ।

महेश : (गाल सुहरैती) का तुँ महिन नै चिहन्लो ? मै ओहे त हुइँतुभे । संग्गे काठमाण्डौं गैल रही ।

ललिताः (हँस्ती) ए तुँ ओह महेश हुइतो । लेउ त रामराम और का बा हाल ?

महेश : (गाल सुँहरैती) अरे का रही ज्या कर्ना रहे करसेक्लो ।

एक्थो पहारी मनैया थारू लौण्डीसे भोज करथ् । कामके सिलसिलामे ससरार पुगल । ऊ पहरिया ससरार ढिक्री खाइ पाइत् त बरा मिठ लग्थीस् । आपन जनेवाहे घरेजाके ढिक्री बनाई कहम् कहिके सोच्ले रहथ् । घरे जाईबेर ढिक्री ढिक्री सोच्ती सोच्ती ढेलामे उसितके गिरपरथ् । ढिक्री शब्द बिसरा दारथ् । गिरल बेला 'हत्तेरी' कही मारथ् । अव ओकर दिमागमे हत्तेरी आजिथिस् । ओ आपन जनेवाहे घरे जाके हत्तेरी उसिन त कहथ् । ओकर जनेवा बुझ्बे नै कर्थिस् । तव झोक्काके एक थप्पर जनेवाहे मारथ् । जनेवा हेग मर्थिस् । हेगहागके जनेवा एहरी ढिक्रीहस गुह आगिल कथिस् । तव ऊ जानत हाँ ढिक्री ढिक्री उसिन त मै बिस्रा मर्ले रहुँ ।

एकदिन कब्बु नै चिलगारीमे बैठल भेभला चिलगारीम् बैठके काठमाण्डौं जाइतेहे । ऊ बरा पान खैनाहा रहे । चिल्गारीक् स्टाफसे ऊ पुछल

भेभला : ए भैया ! मै बरा थुक्नाहा बातुँ । कहाँ बा थुक्ना ठाउँ ?

स्टाफ : ऊ साइडमे लाल बटन बा । लाल बटन थिच्बी त ढक्कन निक्री । ओम्नहँ थुकदेवी ।

भेभला : ठीक बा कहिके सिटमे बैठत् ओ पान चगराई भिरत् । एक घचिक रहिके उहीहे थुक्नस लग्थीस् । सिटमसे यहोंर ओहोंर भित्ताओर हेरत् कहुँ नै लाल बटन देखत् । दोसर मनैया सिटमे लाल टीका लगाके आँखी टुम्ले बैठल रहथ् । भेभला सोचत् सायद यिहीहे कहल हुई । आपन सिटमसे उठत् ओ लालटीका लगाईल मनैयक लिल्हारमे अंगरीले दत्तके दाबत् । ऊ मनैया चिल्लाके मुह बाइत् तवही ओकर मुहमे ऊ फचाकसे थुकदेहथ् ।

काठमाण्डौंसे नेङ्गल बस गोरसिंङ्गे आके भात खवाईक लाग रूकत् । बस रूक्तिकी होटलमसे एकथो युवति आघे आके टौंटफारे कहे लागथ् - मुटना पाछे ! मुट्ना पाछे !! । सक्कु यात्रुहुत्रे बस मनसे उटरके यहोंर ओहोर पेल्थैं । बसेमे घुम्नाफे बैथल रहथ् । ऊ अचम्म मन्ती लौण्डीहे पुछथ् -

घुम्ना : हैन, सबके त मुट्ना आघे रहथ् । अपनेक भर मुट्ना पाछे बा कि का ?

लौण्डी : लज्जित होके ! खिस्स हाँसत् ओ शौचालय घरक् पाछे बा कहथ् ।

घुम्ना त अक्क न बक्क ।

तीन देशके मनै चीन देश घुमे गैल रथैं । एक्थो अमेरिकन रहथ् । दोसर भारतीय रहथ् । ओ तिसर नेपाली रहथ् । चीनमे घुमेबेर अमेरिकन् आपन आँखीमसे चश्मा निकरती कहथ् - हमार देशमे तमाम चश्मा रहथ् । यहाँक् चश्मा का कर्ना हो कहती चश्मा तलुवामे फेंक देहथ् । भारतीयहे रिस लग्थीस् । आपन देशमे तमाम कोट रहथ् कहती घालल कोट निकारके पानीम् फेंकदेहथ् । आब पर्लीस् फँसाद नेपालीहे । का फेंकु का फेंकु सोचत । भक्कसे उठाके भारतीयहे तलुवामे फेंक देहथ् । अमेरिकन पुछथ् का कर्ले तैं ? नेपाली कहथ् - हमार देशमे भारतीय तमान बतैं ।

हथिया ओ चिम्ताके बहुत दोस्ती रथिन् । दुईजाने संघरियन एकदिन घुमे बाहर निकरथैं । घुमत् फिरत् हथिया आपन बाबाहे दूरेसे आपनओर आइत् देख लेहत् । उहीहे पर्थीस् फँसाद । डर लग्थीस् । आपन बाबासे गारी पाइक डरे भग्ना प्रयास करत् । हथियाहे भागत् देखके चिम्ता कहथ्- हत्तेरी संघारी कहाँ भागती ? बरू मोर पाछे आई नुकजाई । मै अपनेहे बचा लेम ।

वैशाखके महिना रहथ् । हरहर हरहर हावा लागल रहथ् । हरि ओ शिव स्कूलसे डुपहरके पढके अइती रथैं । ओइने एक आपसमे अत्रा घामम आगी लग्लसे त जम्मा घर जरजाई ना बात बत्वैथी अइथैं । ओहेबेला आपनसे थोरिक दूर रहल घरम ओइने आगी लागल देख्थैं । ओइनके आघे एकथो लौण्डीफे नेङ्गती रथी । एकफाले आगी लागल देखके शिव कहथ् - ओ हो ! रूकरी लागल बा । ओकर बात सुनके आघक लौण्डी ठक्कसे रूकजाईथ् । ओकर बात सुनके कहत् - का कहते ? शिव कहथ् मै तुहिन कुछ नै कनुँ । लौण्डी काकरे 'रूकरी' कले त ? पुछथ् । लौण्डीक् बात सुनके दुनुजाने गलगलसे हाँसदेथैं । लौण्डी अक्क न बक्क ।

एकथो ८० वरषके बुर्हुवा २२ वरषके लौण्डीसे भोज करत् । अत्रा बुरहाइलमे भोजकर्ना जाँगर देखके ओकर नतियन् छक्क परल रथैं । एकदिन बुर्हुवक् एक्थो नतिया आपन बुदुहे भोज करत् देखके प्रश्न पुछथ् -

नतिया : बुदु ! अपनेक् त दाँतफे टुट सेकल । अत्रा बुर्हाइलमे का करे भोज करती ? लाज नै लागत् ?

बुदु :- अरे नतिया ! अपनेफे का बात बत्वैथी । भोज करके त्वहार बुदीहे चबैना थोर बा त । दाँत काकरे चाहल ? भोज करकलाग दाँतसे का सरोकार ? बुदुक बात सुनके नतिया अक्क न बक्क....।

रामभरोसे घरक् आर्थिक स्थितिकेकारण पैसा कमैना हिसावसे विदेश गैल रहथ् । ओकर घरे जवान बथिनिया जन्नी रथिस् । आपन जन्नीहे छोरके मन त ओकर कहाँ रहिस् लाहुर कमाई जैना । मने का करे विचारा ! बाध्य होके जाई पर्थीस् । विदेशसे महिनम् महिनम् ऊ आपन जनेवाहे फोन करत् । सुख दुःखके बात बत्वाइथ् । एकदिन फोनमे बत्वैती हुँकार जनेवा कहथी- मोर मनके खुँटा ! उदास ना हुइहो । मै मजे बतुँ यहाँ । कत्रा दुःख करके तुँ मोरलाग पैसा पथादेथो । तवमारे त मै यहाँ एकदम कम कम खैथुँ । एकदम मीठ खैथुँ । खैना त छोरी अपनेक दुःख देखके मै कप्राफे छोट छोट लगैथुँ । जनेवक बात सुनके रामभरोसे गुमसुम होजाइथ् । ऊ पुछथ् - काकरे छोट छोट कपरा लगैथो त ? जनेवा कहथिस् - त्वहार दुःख देखके त हो काहुँ । रामभरोसे नाजवाफ होजाइथ् ।

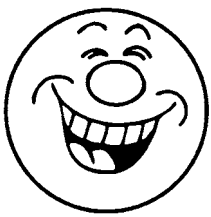

एकदिन एकथो पहुना आपन नातपातन घर पहुनी खाई गैल रहथ् । साँझके मजासे मर्जादके लाग शिकार भात खवैथिस् । विहानके कलुवा खाके घरओर जैना पहुनक विचार रथिस् । विहान्ने सुतके उठ्त ओ दिशा पिसाव करत् । विहानके चिया बनाईक लाग घर मलकिनिया जब तयार हुईथी, घरम चियापत्ति ओराइल रथिन् । आपन छावाहे कहथी - सोंधु ! जा त मुना चिया लेके आ । पहुनाफे ओथहँ बैथल रहथ् । ओत्रा सुनत् त महिन मुवाइकलाग बातैं कहिके ऊ मुटे जाइतुँ कहिके चिप्पसे आपन घरओर टाप होजाईथ् । एक घचिक पाछे लौण्डा चियापत्ति लेके आइथ् । चिया बनाके पहुनै खोज्थैं त पहुना त बेपत्ता । पहुनक् खोजाखोज ।

एकथो मस्तर्वा कक्षा नौ के कक्षम् पढाईबेर सुशीलहे पुछत् -

मस्तर्वा :- शुसील ! लेऊ तराईके एक्थो जिल्लक नाउँ बताउ त ?

सुशील : जरूक्कसे उठके । अक्क न बक्क होके उप्पर सास लेहथ् । बरा कर्रा पर्जिथिस् । ओहेबेला ओकर 'बारा' कोठक दुवारीमे भेटे आजिथिस् । देखके 'बारा' कहिदेहथ् ।

मस्तर्वा : स्याबास । कहिके बैठक कहिदेहथ् । स्याबास कहल सुनके शुसीलहे अचम्म लग्थिस् । ऊ सोचथ् मोर बारा आज महिन बचादेलैं । सुशीलहे बारा जिल्ला हो कना पत्ता नै रथिस् ।

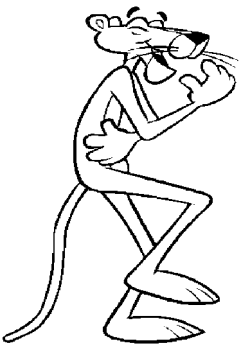

श्रीलंकाके रावण एकदिन पृथ्वीके सयर कर्ती दारूपिना बहनामे नेपालमे आइल रहथ् । ऊ एकथो गाउँमे रहल भट्टीमे पुगके मनैन् दारू पियत् देखत् । ऊ फे दारू मागत् । भेटैतीकि सतासत दारू पिदारथ । ऊहीहे दारू पियत् देखके पन्जरे बैठुइया मनैया पुछथ् - अपने के हुई महाराज ? लौण्डक् प्रश्नके जवाफ देती रावण कहथ् - मै लंकापति रावण हुँ, रावण । ओकर बात सुनके लौण्डा कहथ- ले भर्खर तुहीहे दारूक बाण लागल ।

कैसिन बा दारूक बाण .....।.....

दिपेन्द्र एकदिन बजार जाईतहे । डगरामे एक्थो मनैयाहे ओनाट होके सुतल देखथ् । ओकर लग्गेजाके हेरल । मनैयाहे गीत गाईत् देखल् । दिपेन्द्र बिनबोल्ले सरासर बजार चलदेहल् । जब बजारसे सामान किनके घरे लौटेबेर, फेन ऊ मनैयाहे ओथहँै देखत् । ऊ मनैया घोपटिया होके सुतल रहथ् । दिपेन्द्र फेन ओकरथिन जाईथ् । उही गीत गाईत् सुनथ् । मनैयाहे पुछत् - ओ महराज ! अपने तम्म्हँ ओनाट रही, अवखी घोपटीया हुइल बाती । का हुईता अपनेहे ? तव ऊ मनैया जवाफ देहथ् - तम्म्हँ 'ए' साईडके गीत गाईतहुँ । अवखी 'बी' साईडके गीत गाईतुँ । दिपेन्द्र अक्क न बक्क ...।

कक्षा कोठामे मस्तर्वा पढाइबेर एकथो लौण्डी एकदम अक्के बेन्चमे किल बैठत् । एकदिन एक्थो लौण्डा ऊ लौण्डी मुते गैलबेला ओकर सिटमे जाके बैठजाईथ् । लौण्डी मुतके आइथ् । यी मोर सिट हो कहिके लौण्डाहे उथे कहथ् । लौण्डा जवाफ देहथ् - यी सिट कैसिक त्वहाँर हो ? तव लौण्डी कहथ् -यहाँ मोर किताव ढारल बा तवमारे । लौण्डा उठत् ओ आपन किताव लौण्डीक कपारीम धरदेहथ् । फेन कहथ् - लेऊ मै त्वहार कपारीम किताव धरदेनु । आजसे तुँ मोर हुईगिलो । लौण्डी हेर्ती रहिजाईथ् ।

एक्थो लौण्डी कक्षा ९ के परीक्षामे पास हुईथ् । रिजल्ट सुनके खुशी हुईती दौरती आपन घरे जाईथ् । घरम रहल आपन दाईहे फुलेहस बत्वैती कहथ् - दाई दाई ! मै पास होगिनु । ऊ फे सेकेन्ड । ओकर दाईफे छाईक बात सुनके बरा खुशी हुईथि । आपन छाईहे स्वायासी देती पुछ्थी - अरी छाई स्कूलसे कैजे परीक्षा देले रहो ? दाईक प्रश्नक जवाफ देती लौण्डी कहथ् - दुई जाने । तवमारे त मै सेकेण्ड अइनु । छाईक् बात सुनके दाई अचम्म ।

दुईथो अमेरिकन नागरिक इण्डियामे घुमे आइल रथैं । विहानके घुमेबेर ओइनहे चियाखैना मन लग्थिन् । दुनुजाने होटलके आघे जैथैं । ओइनहे देखके होटलहुवा पुछत् -

होटलहुवा : क्या चाहिए भाइजान ?

कुइरे : टु कप टी ।

होटलहुवा : क्या कहा ? फिरसे बोल ?

कुइरे : टु कप टी, टु कप टी ।

होटलहुवा : (रिसैती) टु कपटी साला । तेरा बाप कपटी ।

होटलहुवक बात सुनके कुइरे अक्क न बक्क ।

एक समय हँथिया ओ चिम्तक प्रेम होजिथिन् । बहुत गहिर प्रेम हुइलक कारण दुनुजाने भोज कर्थै । समयके दौरानमे हथियाहे विदेश जैना काम पर्थीस् । हँथियाहे विदेश जाईथ् देखके चिम्ता बरा चिन्तामे परजाइथ् । हथियाहे विदेश नैजैना अनुरोध करथ् । चिम्ता हथियाहे अनुरोध करेबेर कहथ् - मोर डुलारू, मोर मनके राजा । महिन छोरके नाजाऊ । मै त्वहार विना रहे नै सेकम । काकरे कि मोर पेटमे त्वहार बच्चा पलता ।

एकदिन मर्निङवाल्क करके एकथो कार्यालयके हाकिम चिया पसलओर चियाखाई जाइत् । चिया पसले चिया बनाके देहथ् । दुई सुरूक्का का पिले रहथ् । मछिया आके चियामे परजिथिस् । तिसरा सुरूक्का पिए जाईलागत् त चियामे मछिया परल देखथ् । ऊ झोंक्कैती कहथ्–

हाकिम : ए पसले ! हेर त चियामे मछिया परल बा ।

पसले : (झर्कती कहथ्) - अरे हाकिम साब ! दश रूपियक् चियामे मछिया नैपरी त का मोटरसाईकल परी ? पसलेक् बात सेनके हाकिम अक्क न बक्क .....।

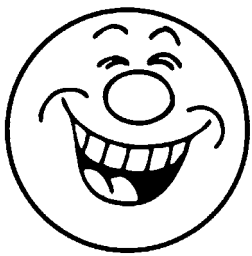

श्री मालिका निम्न माध्यमिक विद्यालयके तीन कक्षामे पढुइया हरि चौधरी बरा खुर्चिल्हा रहथ् । ऊ जबफे मस्तरूवा पढाईबेर खुर्चील खुर्चील कर्ती रहथ् । मानो कि ओकर बानी खुर्चिल्हा रथिस् । ओकर बान देखके मस्तर्वा एकदिन गरयैती कहथिस् - ए हरि काकरे तै बेधव चल्थे ? रोजदिन तैं पढैनाबेला लर्कनसे चल्थे ? शान्तिसे बैठ । लौण्डा मस्तर्वक् बात सुनके कहथ् - सर शान्ति नै आइल हो वसन्तीक्सँग बैठुँ ? लर्का गलल्लसे हाँसदेथैं । मस्तर्वा त अचम्म ।

एकदिन एक्थो मस्तर्वा आपन कक्षामे गणित विषय पढैती रहथ् । एक घचिक कलास लेके ऊ सुरेन्द्रहे पुछत् - ए सुरेन्द्र ! ले बता त, एक स्याउ ओ एक स्याउ कत्रा हुई ? सुरेन्द्र मस्तर्वक् प्रश्नक जवाफदेती कहथ् - दुई स्याउ सर । ओकरपाछे मस्तर्वा जोधुरामहे पुछथ् - ए जोधुराम ! ले तैं बता त एक पचास ओ एक पचास कत्रा हुई ? जोधुराम हँस्ती कहथ् - दुई पचास सर । तव मस्तर्वा कपार खुन्ज्यैती कहथ् लेखायो पढायो सोह्रदुना आठ बनायो के काम ? लर्का गलल्लसे हाँसदेथैं ।

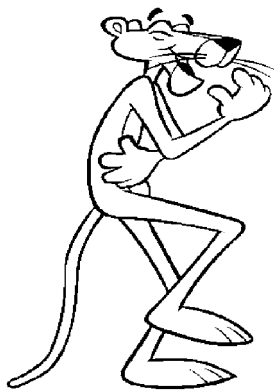

एक्थो सुग्घर बथिनिया घटुवम्से पानी भरके अइती रथी । हुँकार ठेक्नम ओ मुरीम गग्री रथिन् । ओहोर दोसर ओरसे रमेश लौण्डा 'शितरी मौसम याद महि तुँ ऐलो .....' बोलके गाना गैती आपन धुनमे रहथ् । बथिनिया ओ रमेश डगरिम लर पर्थै । एक्फाले रमेश लरलारके सरी सरी ! कहथी माफ मागत् । ओकर बात सुनके बथिनिया कहथी - सरी मोर थिहुन् सरी । गग्रीक् पानी बोकल नै देख्थो, अपने सर्लसे त होगिल जे.....। रमेश अचम्म ।

एकदिन रमेश स्कूलिम्से मस्टर्वक गारीखाके रिसोटल घरे आईथ् । घर पुगके आपन झोलाओला धरके सिधा आपन बाबकथिन जाके रेडियो बजैना सेल मागत् । बाबा सेल मागत देखके का कर्बे कहिके पुछथिस् । ऊ रिसोटल बोलत । मोर मस्तर्वा एकदम सेलफास खाके मरजाईस् कहथ् । तवमारे मै सेलखाके फाँसी लगैना सोच्ले बातुँ । लौण्डक बाबा अक्क न बक्क .....।

दुईजे बड्डा बड्डी इंगलिश सिख्ना कोसिस कर्थै । ओइने अपनहँ अशिक्षित रलसेफे अंग्रेजी सिख्ना रहर लग्थिन् । अंग्रेजी सिख्ना क्रममे बुढ्वा आपन जन्नीहे कहथ् - ले री, आजसे तै महिन हसबैण्ड कहिस मै तुहिन वाईफ कहम् । समय प्रसंगअनुसार बड्डा बड्डी पहुनी खाई जैथैं । पहुनी खाई गैलबेला एक जनहनसे परिचय कथैं । अन्जान मनैया बुढीयाके परिचय पुछथ् । तव बुढिया कहथ् - ऊ मोर बैन्डवाजा हुइतैं मै हुँकार पाइप । मनैया अचम्म ।

एक्थो गाउँले मनैया बजारमे आके खोव छानके जापानमे बनल रेडियो किनत् । एकदम बल्गार रेडियो चाहल कहलक् कारण दोकनदर्वा उहीहे जापानमे बनल रेडियो किन्ना सल्लाह देहथ् । रेडियो किनके ऊ घरे पुगत् । रेडियो लगाइत् त रेडियोमे यी रेडियो नेपाल हो । कहिके प्रशारण हुइत् सुनत् । उहीहे बरा अचम्म लग्थिस् । किनेबेर त जापानी रेडियो किन्ले रहुँ । यी रेडियो घरी घरी नेपाल हो कहता । विश्वास नै लग्थीस् उही । रेडियो बन्द कैके फेन खोलत् । फेन यी रेडियो नेपाल हो कहिके कहत् सुनत् । उहीहे लग्थीस् रिस । रेडियो उठाईत् ओ पटक देहथ् । साले ! मै त जापानिज रेडियो किन्ले रहुँ । घरी घरी रेडियो नेपाल हो कहता । ओकर रिस बाहर निकरजिथिस् । घरक् मनै अचम्म ।

एकथो ससुइयक् दमदुवा आपन ससरार गैल रहथ् । ससरारीक ओकर ससुइया खैना देहेबेर कैंठक टिना पकैल रथिन् । टिना देती ससुइया कहथी - दमदा ! कैठा खैठा कि नै खैठा ? ससुइयक् बात सुनके दमद्वा कहथ् - कैंठा सैंठा मै नै खैठा । ससुइया फेन थथ्थी-यी ! मै लन्दी जुन मुघनियक चिङ्गनिया मिलादेल बातुँ । ससुइयक बात सुनके दमद्वा हाली कहथ् - खैठा ! खैठा !! सक्कु खैठा !! ससुइया अचम्म ।

हरि बहुत दिनकेबाद स्कूल पढे गैल रहथ् । बहुत दिनके बाद स्कूलमे आइल देखके ओकर मस्तर्वा पकलभुत्ली पाछेसे उही देखके कहथिस् । ए हरि ! कहाँ गाथ्यो तिमी ? यतिका दिनपछि स्कूलमा बल्ल बल्ल आयो ? हरि विलितके हेरत् ओ कहथ् - ए नमस्कार सर ! सर पो हुनुहुँदो रहेछ । 'सरपो' शब्द सुनके मस्तर्वा पकलभुत्ली भस्कती कहथ् - ए हरि बचा ? कहाँ छ सर्पो ? मस्तर्वाहे छटकट देखके हरि टाँटा फार फार हाँसत् ।

एकदिन सुबोध आपन दाईहे पुछथ् - दाई ! तोर जनम कहाँ हुइल हो ? तव दाई कथिस् - वर्दिया जिल्ला । ओकरपाछे आपन बाबाहे पुछथ् - बाबा ! तोर जनम कहाँ हुइल हो ? बाबा कथिस् - कञ्चनपुर । ओकरपाछे ऊ पुछथ् - मोर जनम कहाँ हुइल हो ? तव ओकर दाईबाबा कथिस् - कैलाली । दाईबाबक् बात सुनके सुबोध कहथ् - त हमार भेट कैसिक होगिल ना ? मै कैलाली, दाई वर्दिया बाबा कञ्चनपुर । तीन जिल्ला ऊ फे फरक फरक जनमकेफे हम्रे अक्के कोठम् बाती । ओकर दाईबाबा अक्क न बक्क .....।

सबदिन सक्कहँरिसे काम कर्ना जीवन आज अक्को नै बोलथो । ना काम करे जाईथो । उहीहे झोक्र्याइल देखके ओकर जनेवा कहथिस् - अहोई, राजुक बाबा ! आज का हुइता तुहिन् ? ना काम करे जाईथो ना बोलथो । भुँसियाइलहस् चिमचाम बैठल बातो । ओहोंर गोरू बछरू सब घारीम् पर्ली बातैं । जीवन जुन पत्रिकामे निक्रल राशीफल हेरके झोक्र्याइल रहथ् । ओकर राशीमे आजके दिन महा बह्निया बा । ज्या काम कर्बी त बह्नियासे कर्बी कहिके लिखल रथिन् । जनेवक् बात सुनके ऊ झोंक्काके कहथ्- ले हेर । पत्रिकामे आज बह्निया रना लिखल बा । तवमारे त मै कैसिक काम करूँ कहिके चिन्तामे बातुँ । थरूवक बात सुनके ओकर जनेवा अक्क न बक्क .....।

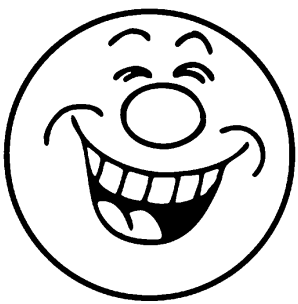

एक्थो लौण्डा एकदिन आपन संघरियन्सँग डगरी डगरी नेङ्गतेहे । उहीहे देखके एक्थो लौण्डी जिस्क्यैती गाइथ् - देखा हे पहिली बार साजनके आँखोमे प्यार । लौण्डा कुछ नै बोलके उहीहे मनमने कहथ् - रूक ! कौनो दिन त फेला पर्बे ? लौण्डा चलजाईथ् । दोसर दिन लौण्डी आपन संघरियनसँग साइकलमे सवार होके आईथ् । लौण्डी बरा मोट रहथ् । उहीहे देखके लौण्डा जिस्क्यैती गाइथ् - देखाहे पहिली बार साइकलपे हात्ती सवार । लौण्डी रिससे चूर .....।

रोजदिन हस् आपन अफिसके हकिमवासे गारी पाइत् पाईत् थकल एकथो जनेवक थरूवा एकदम गुस्साइल रहथ् । आपन जनेवाहे कहथ्- सद्द सद्द यी जनेवा महिन ढिला कै देहथ् । आज समयमे भात नै पकाई त ? समयमे लुग्रा नै धुई त जन्ले रही ससरी ? थरूवक् बात सुनके जनेवाफे रिसैती कहथी- नै पकैम् भात समयमे । नै धुइम् लुग्रा समयमे । का करदेवो ? जनेवक गर्जन सुनके थरूवा मनेमने सोंचत ओ कहथ्- अरी का करम अपनहँ गारी खालेम् ।

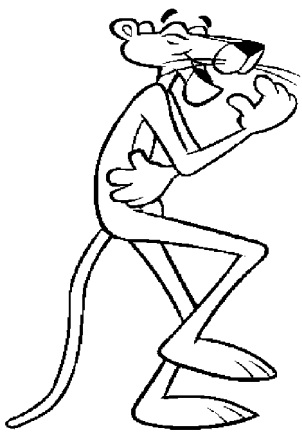

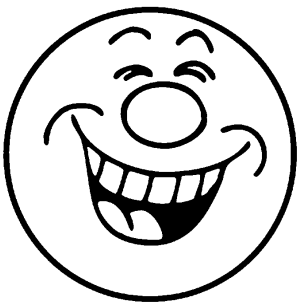

जेठ २८ गतेसे पानी परत् देखके एक घरक् ससुइया ओ पतोहिया वियार कट्ना सल्लाह कर्थै । वर्खा परल कहती ससुइया आपन लौली पतोहियाहे वियार काटे जा कहिके आदेश देहथी । लौली पटोहियाफे लावा-लावा तनक भनक अरहैतीकि हंसिया खटोली लेके खेतुवाओर चलदेथी । खेतुवम जाके एकदर्जे वियार हँसियाले घाँस काटेहस काटके धैदेथी । आधा घण्टापाछे हुँकार ससुइया खेतुवा अइथिन् । पतोहियाहे दरदर दरदर वियार काट्ट देखके ससुइया चिल्लैती कहथी - एहरी ! पतोहिया जम्मा वियार काटदेले भे ? माउक् बात सुनके पतोहिया कहथी- ओहरो ! माउँ तुँ त वियार काटे पथैलो जे । ससुइया अक्क न बक्क ।

प्रतीक रोजदिन पढे स्कूल जाईथ् । मने स्कूल नै पुगके डग्रीमे एहोंर ओहोंर डुलके समय विताईथ् । लौण्डा स्कूल जाईथ् कहिके बाबाफे ढुक्क रथिस् । एकदिन ओकर बाबाहे कोई बतादेथिस् ओकर छावा स्कूल नैजाके डग्रीम खेल्थीस् कहिके । ऊ स्कूल जाके आपन छावक बारेम पुछत् । ओकर मस्तर्वासे प्रतीक स्कूल नै आइल पता पाईथ् । दिक्काइल घरेआके आपन छावाहे पुछथ् - प्रतीक छावा ! तैं पढे जैथे कि डुले ? आपन बाबक बात सुनके छावा कहथ्- बाबा मै ना पढे जैथुँ ना डुले । मै त स्कूल जैथुँ । बाबा अक्क न बक्क ।

ज्योति कना लवँरिया आपन संघरियनसँग घुम्ती भकुन्डक बजार पुग्थी । बजारमे रामहेर्ना हिसावसे गैल ज्योति बजारके चिन्हा त कुछ कुछ किने परल कहिके एक्थो लुग्गक् दोकानमे जैथी । रूमाल हातमे उठाके देखैती बजियासे हिन्दीमे पुछथी - भाइसाप ! इस्की रूमाल किस्की है ? हुँकार बात सुनके बजिया अकमका जाईथ् । फेन ज्योति ओहे प्रश्न दोहो-यैथी । एक घचिक पाछे बजिया बुझेहस करके कहथ्- बहेन २० रूपे देदिजिए रूमाल आपकी है ।

एकदिन एकथो लौण्डा एक्थो अपरिचित लौण्डीहे वाह ! त्वहार चप्पल का सुग्घर कहिके जिस्क्याइथ् । लौण्डी चप्पल निकारूँ ? कहिके नैमजासे दम्क्याइथ् । दोसर दिन लौण्डा वाह ! त्वहार सुरूवाल कुर्ता कत्रा सुग्घर कहथ् । लौण्डी चुपचाप सुनत् किल । कुछ नै कहथ् । लौण्डा फेन जिस्क्यैती कहथ् - का आज सुरूवाल कर्ता नै निकरबो ? लौण्डी अक्क न बक्क ..... ।

एक्थो बुह्निया खोव भुख लागल कहती एक्थो लौण्डासे बत्वाइत् । भुख का करे लागल बुदी ? लौण्डा पुछथ् । बुह्निया जुन यी साल मरजैम कहिके खेती लगैबे नै कर्थी । एक्थो छाई बा उरहरके चलजाई सोच्ले रहुँ कथी । तौन त ना मै मुनु ना छाई उरहरके गैल । तवमारे घरम खैना नैहोके बेधब् भुख लागल बा कहथ् । ओकर बात सुनके लौण्डा अक्क न बक्क .....।

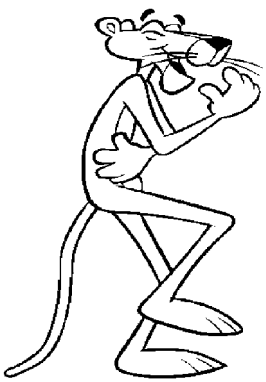

राम ओ पुकार एकदिन एकापसमे बात कर्थै । और दिनके तुलनामे पुकार बरा च्याटचुट परके आइल रहथ् । उहीहे देखके राम कहथ् - कौन हिरो कहुँ । गोविन्दा, राजेश हमाल या अभिताभ बच्चन ? रामके बात सुनके पुकार नेपाली भाषामे कहथ् - भो भो तिमी जेठान यार ? पुकारके बात सुनके राम कहथ् - हत्तेरी ससरिक लर्का । मै त त्वहाँर बाबुहे आपन बाबु मन्ले रहुँ । तुँ त जेठान कहिदेलो यार !

एकदिन सन्देश आपन संघरियनसँग क्याम्पस पढे जाईतेहे । ओकर संघरियक् झुलुवम् पाछेओर फुला बनाईल रहिस् । लौण्डक पीठिम फूला देखके पाछे पाछे अउइया लँवरियन् हमार आघेआघे त फुलरिया जाईता कहिके जिस्क्यैथैं । लँवरियनके उठाईल बातके जवाफ देहेबेर सन्देश कहथ् - हमार संग फुलरिया बा तवते पाछे पाछे जोग्नी आइतैं ।

एक्थो शहरमे जन्मल लौण्डा कबु नै जाम खैल रहथ् । एकदिन ऊ मामनघर पहुनी खाई आपन दाईकसँग गाउँ जाईथ् । ओकर मामा ! बनुवाओर घुमाई लैजिथिस् । जाम खैबो ? कहिके आपन भान्जाहे मामा पुछ्थैं । भान्जाफे का कम । हाँ मामा खवाई परल कहिके जिद्दी करे लागत् । मामा रूखवम् चहुँरत् । आपन भान्जाहे करिया दाना हेरहेर खैहो कहले रहथ् । लौण्डाफे का कम । आपन मामक् झराईल जाम खैती खैती करिया गोंगैराहे उठाके मुहम् दारलेहथ् । गोंगैरा चें-चें करत् । सुनके भान्जा कहथ् - तैं चें कर चाहे में कर मोर मामा महिन करिया जाम खाई कले बातैं ।

एक्थो दुई युगल जोडी एक आपसमे बहुत प्यार करैं । भोज कर्लक् तीन सालपाछे एक्थो छाई हुइथिन् । छाई जन्मल दिनसे ओइनके मनमुताव सुरू हुइथिन् । थरूवा आपन जन्नी हे कहथ् - मोर छावक् मुहहेर्ना बहुत इच्छा रहे । तैं छाई जन्मादेले । आव तैं महिन छोर ओ आपन डगर लाग । जनेवाँ झर्कती कहथ् - अरे यी त एकथो छाई हुइल बा । त्वहार भरपर्तु कलसे त यिहे छाई फे नै हुइने रहे । थरूवा अक्क न बक्क .....।

एक्थो हिरोनी आपन थरूवाहे दारू पियत् देखक दिक्क हुइल रहथ् । बहुत सम्झाइत् । मने थरूवा पिए नै छोर्थिस् । एकदिन आपन थरूवाहे धम्की देहथ् । दारू पिए छोर्ना बा छोरो नै त मै फाँसी लगाके मरजिम् । हिरोनीक बात सुनके ओकर थरूवा हस्ती कहथिस्- अरे तैं कत्रा फिलिममे फाँसी लगाके मर सेक्ले । मै कैसिक पत्याउँ ? तौनफे मही छोरे नै सेक्थे ..... । हिरोनी अचम्म ।

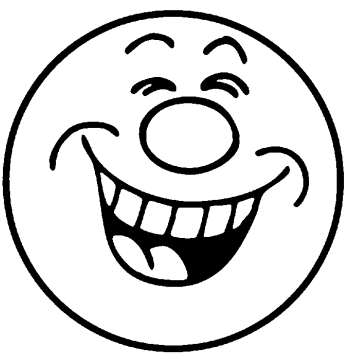

एक्थो मनरख्ना आपन मनरख्नीहे रेष्टुरेन्टमे खाजा खाई लैजाईथ् । ओहाँ पुगके आपन मनरख्नीहे का खैबो ? कहिके पुछत् । एक घचीक लौण्डी चुपचाप लागल रहथ् । ओहेबेला पाछओरसे ओकर थरूवा पुगल रथिस् । आपन थरूवाहे देखके ऊ डरकमारे चुपचाप रहथ् । फेन मनरख्ना का मगाउँ ? कहिके कहथिस् । तव मनरख्नी कहथ् - हमार लाग दुई प्लेट मम ओ आपन लाग एम्बुलेन्स मगाउ । बात सुनके छक्क पर्ती ऊ फेन कहथ् - काकरे एम्बुलेन्स ? तव लौण्डी कहथ् - काकरे कि मोर थरूवा पाछे बैथल बातैं मुंग्रा लेले । लौण्डा अक्क न बक्क ।

दुई अपरिचित संघरियन एक आपसमे परिचय कर्थै । पहिले एकथो मनैया आपन नाउँ बताइथ् ओ आपन गाउँक नाउँ, रहना ठाउँक् नाउँ बताइथ् । एक्थो आपन परिचय देके सेकथ् । तव दुसरा मनैया आपन नाउँ बताइथ् । काठमाण्डौंके नयाँरोडमे अपने बैठ्ना बताइथ् । ओकर परिचय देहलपाछे फेन पहिला मनैया कहथ् -

पहिला मनैया : ए अपने त कामनपामे बैठथी ना ? ओकर बात सुनके दुसरा (रिसैती) कहथ्

दुसरा मनैया : ए महिन काम नैपाइल मनै मन्थी । मै मन्त्रालयमे सचिव बातुँ कहथ् ।

पहिला : नै मै त काठमाडौंमहानगरपालिका कहे खोजल हो । दुसरा जिल्ल परजाइथ् ।

एकदिन भुस्याहा कुक्रनके बैठक हुइथिन् । हम्रहिन देख्तीकि काहे सबजे भुख्थैं ? ओ समाजसे लखेट्थैं कहिके छलफल हुइथिन् । छलफलसे कुक्रा हुक्रे ज्ञापनपत्र बुझ्काई प्रधानमन्त्रीक् थे जैना सल्लाह कर्थै । जैती जैती लदिया तर्ना हुइलक कारण एक्थो कुक्रा कागज भिजजाई कहिके ज्ञापनपत्र हेग्ना (मलद्वार) के भित्तर दवाके लैजाईथ् । जैतीजैती डगरीमे ऊ ज्ञापनपत्र हेरा जैथिन् । तवमारे कुकुर आजफे दोसर कुक्रा देख्तिकी सबदिन एक आपसमे भुँक्ना ओ दोसरके मलद्वार चितैना काम कर्थै । कहुँ ज्ञापनपत्र मिली कि कहिके ।

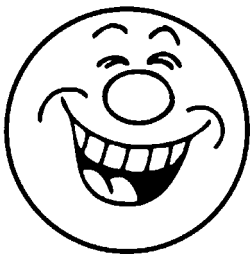

एक जोडीनके बीचमे गहिंर प्रेम रहिन् । एक दोसरके विना रहेसेक्ना स्थिति नै रहिन् । सबके लाग बनाईथ् कहिके राधा लौण्डी भगवान कृष्णके अष्टिम्किक् ब्रत बैठथी । आपन प्रेमी सुन्दरहे जाके कठी -

राधा : सुन्दर ! मै कृष्णहस थरूवा पाइकलाग ब्रत बैठल बातुँ ।

सुन्दर : झोंक्कैती कहथ् - ए तुँ आजकल कृष्णक् पाछे लागरलो ? शंका त रहे महिन त्वहार पर । खोव संगेसंगे क्याम्पसमे गफ करत देखुँ । ठीक बा आजसे त्वहार ओ मोर कट्टि होगिल ।

लौण्डी अक्क न बक्क अन्धार मुह लगालेहथ् ।

एक्थो जनेवक लर्का हेग्नी पोक्नी लागके अस्पताल लैगिल रहथ् । चेक करके डक्टर्निया जीवनजल देहथ् । छ चिया गिलासमे मिलाके पटक पटक खवाईस् कहिके कहथ् । डक्टर्नियक बात सुनके जनेवा चुर रिसाजाईथ् । कहथ्- तोरी लण्डी एक त मोर छावा विमार बा । उपरेसे पटक पटक पानी पिवाइस कहते ? हिटिर मिटर लर्का जिई कि मरी .....? ले आपन ओषधी तहिं पटक पटक खा । विरूवा फेकाके जनेवा चलदेहथ् । डक्टर्निया भखभख भखभख हेर्ती रहिजाईथ् ।

एक्थो गाउँक नेता दिनभर कार्यक्रममे व्यस्त रहथ् । गाउँसे बजार अइना, भाषण कर्ना ओ फेन गाउँ घुम्ना । ओकर रात होजिथिस् । घर पुग्तीकि ऊ आपन जनेवाहे रेडियो खोल कहथ् । सक्कु समाचार ओरागिल हुई, हाली खोल कहथ् । जनेवाहे रिस लग्थीस् ओ कहथ्- यहाँ धन्धाले सौंसेतल बातुँ । बड्डकजुन समाचारे ओरैना डर । रेडियो दिनभर खोल्ले नै हुँ त कैसिक समाचार ओराई । सक्कु सामाचर त्वहाँरलाग त बचादेले बातुँ काहुँ .....। थरूवा अक्क न बक्क ।

छावा आपन बाबाहे करिया चश्मा लगाइल देखके अचम्म मन्ती पुछत् ।

छावा : बाबा ! बाबा ! तैं काहे आज करिया चश्मा लगैले ?

बाबा : आँखी बठाइत तवमारे लगैनु रे ।

छावा : का चश्मा लगैबो त ठीक होजाईथ् ?

बाबा : हाँ ।

छावा : मोरफे आँखी पिराइथ् बाबा मैफे करिया चश्मा लगैम ।

छावक बात सुनके बाबा छक्क ।

राम पहिलचो काठमाण्डौं जाइतेहे । जैती जैती रात होजैथिस् । बनुवामे गाडी रोकक् कहिके खलाँसी कहथ् - लेऊ सबजे मुटो है । हाली हाली मुटो, कहिके गोहराईथ् । राम उठत् आपन सिटके उप्रे मुत् देहथ् । उहीहे मुतत् देखके खलसिया गरयैती कहथ्- काकरे गारीम मुतले रे ? राम कहथ् - अरे तैं त सबजे मुटो हाली हाली कले । तवमारे त मै झट्टसे मुत देनु ।

खँलसिया अक्क न बक्क ..... ।

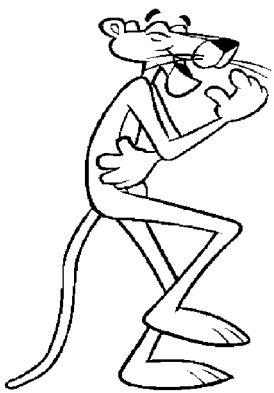

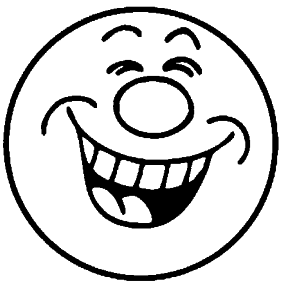

एक्थो मनैया आपन गैयाहे हरियर चश्मा लगादेहथ् । ऊ मनैयाहे चश्मा लगाईत् देखके ओकर परोशी अचम्म मन्ती पुछथिस् - तैं का नान्ह लर्काहस् करते रे ? अव गैयाहे चश्मा लगा देहता । का कर्बे रे चश्मा लगाके ? ओकर बात सुनके ऊ मनैया कहथ्- अरे का करम् मोर गैया सद्दभर हरियर घाँसकिल खोजत् । भुसा, पैंराके नाउँ नै लेहत् । खैबे खैबे नै करत् । तवमारे त सुखाइल चिजफे हरियर देखी ओ खाई कहिके हरियर चश्मा लगादेनु काहुँ । दोसर मनैया अक्क न बक्क .....।

एक्थो मनैयक जनेवा रिसाके मोटर साईकलमे दर्ना पेट्रोल पिलेथिस् । पेट्रोल पिके कोठामे जनेवा दौरता कहिके मनैया घबरैती डाक्टके पास जाईथ् । डाक्टरके थिन जाके हडबड-हडबड कहथ् - डाक्टर साब मोर जनेवा पेट्रोल पिके घरम यहोंर ओहोंर दौरता इलाज करदेहे परल । ओकर हडबडाइल बात सुनके डक्टरूवा सम्झैती कहथैं - तो घवरैना बात का बा ? घरक ढोका लगाली ना, जब पेट्रोल ओरैहिस तव अपने आप बन्द होजाई । मनैया अक्क न बक्क होके घर घुमजाईथ् ।

चारजाने अल्लारे लर्का एक्थो होटलमे नास्ता करे जैथैं । साहुजीसे मम चिकेन मागके खोव खैथैं । खाके सेकके चारू लर्कनमे बिलके पैसा के तिर्ना कहिके विवाद हुईथिन् । चारू लर्का तै तिर तैं तिर करके झग्रा करत् देखके मलिक्वा ओइनके झग्रा सुल्झाइक लाग एकथो जुक्ति निकारत् । ऊ कहथ् - मोर यी रेष्टुरेन्टहे घुमके आउ जे सबसे पाछे आई ओहे तिरी । लर्का सहमत हुइथैं ओ चल्थैं चक्कर लगाई । मलिक्वा हेर्ती हेर्ती आभिन ओइनके डगर हेर्ती बा । कि कब चक्कर लगाके रेष्टुरेन्ट पुगहीं कहिके ।

एक्थो लौण्डा स्कूल पढे जाईत् त एकदम हस् संघरिया गरयैथिस् । ऊ आपन संघरियैसे छोट रलक कारण कबुकाल्ह पिटवाफे पाइत् । एकदिन ऊ आपन बाबाहे डगरीम देखलेहल ओ चिब्ली खाइ लागल । बाबा बाबा ! यी लौण्डा महिन गारी देहता ? छावक बात सुनके बाबा कहथिस् । ठीक त बा त फोंकत्मे गारी देहता कलसे लैले । अत्रा मजा संघरिया कहाँ पैबे ? लौण्डा झन चुर होके आपन बाबाहे घुरीयारके हेरत् ..... ।

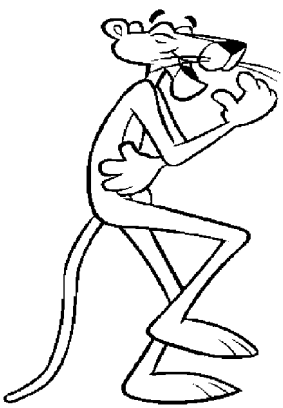

कारसे टकराके एक मनैया अडघटाहा होजाईथ् । एक घचिक पाछे ओहाँ प्रहरीनके भ्यान पुगत् । मनैयाहे अडघटाहा देखके इन्सपेक्टर पुछत् यी ठक्कर के देहल ? तव ऊ अडघटाहा मनैया कहथ् - एक्थो लौण्डी । ऊ लौण्डीक हुलिया बताइ सेक्बे ? कहिके इन्सपेक्टर पुछलपाछे ऊ अडघटाहा मनैया कहथ्- हुलिया त मै बताई नै सेकम सर, लेकिन ओकर मुस्कान मै जरूर पहिचानलेम ।

एक्थो दोकानमे साहु उधार सामान देके परिसान रहैं । जे अइना उधार समान लैजिना । ऊ एकदिन आपन दोकानके आघे बोर्ड लिख्वाके धर्लै कि उधार माङके लज्जित ना बनाई । दोसर दिन एक्थो ग्राहक हुँकार दोकानमे अइलिन । साहु का चाही हजुर बताई कहलैं । तव ग्राहक कहथ् औरे कुछ नै चाहथुँ अपनेहे लज्जित बनैना चाहतुँ । साहुजी अक्क न बक्क ।

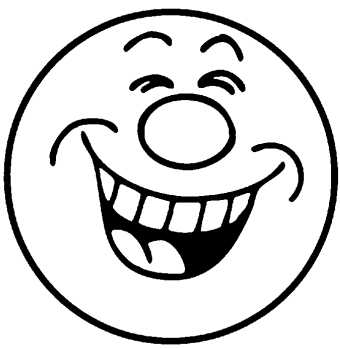

एक्थो दुगदुग बुरहाइल बुरहियाहे रोडमे गिरल देखके डगरीमे नेङ्ती रहल जवान लौण्डा पकरके उठा देहथ् ओ कहथ् बुदी कैसिक गिरगिलो ? बुरहिया कहथ् मै बुरहाइल बातुँ नेङ्ती नेङ्ती उसित् पर्नु । ओत्रा कहिके ओकर चित्त नै बुझ्थीस् । आउर आघे कहथ् - जस्तक तुँ महिन पकरके उठैलो । ओस्तक् तुहिनहे भगवान हाली उठाइँत् । लौण्डा अक्क न बक्क हुइती बुरहियाहे हेर्ती रहिजाईथ् ।

एक्थो मनैया काम करके सेकके भुखाइल रहथ् । घरओर जाईथ् घरे सब खैना चिज ओराइल पाइत् । दौरके लग्गेक छोटमोट होटलमे पेलत् । खैना चिज मागँत् । एक घचिक पाछे ओकर आघे समोसा, जेरी लगायतके खैनाचिज टेबुलमे साउजी लन्थीस् । खाइत खाइत ओ उठत् । उठ्ती रहल बेला साउजी पुछथिस् - कैसिन लागल नास्तक स्वाद ? तव ऊ कहथ् औरे चिज सब बेकार रहे मने पानीक स्वादभर बरा मजा लागल । साहुजी उहीहे हेर्ती रहिजाईथ् ।

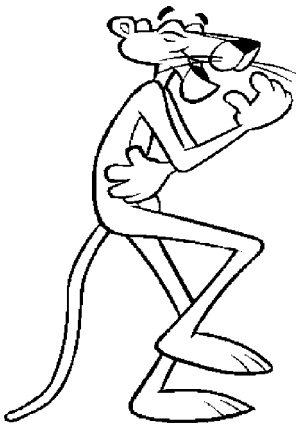

एक्थो थरूवा मेन्धरूवा खोव एक आपसमे झै झगरा करैं । कबुफे ओइनके घर सुनसान नै रहिन् । टोल छिमेकीक् मनै ओइनके घरक नाउँ चैनरान घर राखदेले रहैं । एकदिन थरूवा जनेवाहे छोर्ना छोडमुद्दा अदालतमे दर्ज करल । जनेवाहेफे अदालतमे बयानके लाग उपस्थित कैगिल रहे । जब जज पुछत् ओकर थरूवाहे कि तैं का करे आपन जनेवाहे छोरे चाहते ? तव थरूवा कथिस - श्रीमान् ! मै चार चार लर्कक् बाप बन्ना चाहतहुँ मने यी अक्के लर्कक् बाप महिन बनाइल । तव ओकर जनेवा बात कट्ती कथिस्- श्रीमान् मै यकर अस्रा लग्तु त यी ओहो लर्कक् बापफे नै बन्ने रहे ।

एक्थो चोरूवा भुलबस गरिब मनैयक घर समान चोरे घुसजाईथ् । रातके अन्धारेमे घरम् घुसके टर्च लगाके खोव यहोंर ओहोंर सामान खोजत् । टर्चक् ओजरारसे घरम मलिक्वक आँखी खुलजिथिस् । चिप्पेसे विस्तारम बैठ्ती ऊ चोरूवाहे पुछत् - भैया चोरूवा ! तुँ अत्रा रात यहाँ का खोजतो ? अन्धारम खोजके का मिली तुहिन ? मै दिनके ओजरारम् खोज्थुँ त कुछ नै पैथुँ । त तुँ रातके पैबो ? मलिक्वक बात सुनके चोरूवा खिस्स परके राम राम कहिके बाहर चलजाईथ् ।

एक्थो जनेवा एकदम आपन माङ्गमे लाल सेन्दुरके ठाउँमे हरियर सेन्दुर दारत् । बुहत दिनसे दारत देखके एकदिन ओकर छाई हिम्मत करके पुछथिस् -

छाई : दाई सबजे त आपन माङ्गमे लाल सेन्दुर दर्थै, तैं भर हरियर सेन्दुर काकरे दर्थे ?

दाई : अरी छाई का कबे । तोर बाबा रेलके ड्राइभर बातैं । लाल सेन्दुर देख्तीकि रूक जिथैं । तवमारे हरियर सेन्दुर दारल हुँ । दाईक बात सुनके लौण्डी अक्क न बक्क होजाईथ् ।

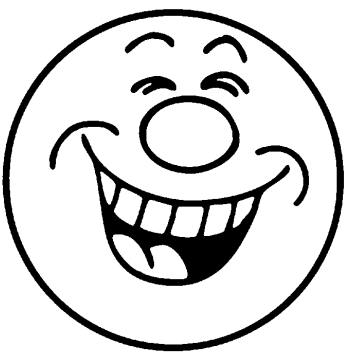

एक्थो लौण्डा कफ्र्यू लागल बेला मुते अंगनामे बाहर निकरजाईथ् । लौण्डाहे देखके प्रहरी उहीहे बाहर काकरे निकर्ले चोल प्रहरी चौकी कहिके कहथिस् । तव ऊ लौण्डा कहथ् - मै कच्छाकिल घल्ले बातुँ । रूकी एक घचिक मै कपरा लगाआउँ । तव जाब । प्रहरीफे हाँ जा कहिके पठादेहथ् । बरा घचिक होजाईथ् लौण्डा बाहर नै निक्रत् । तव ऊ ढोकापर जाके ए बाहरनिकर कहथ्। लौण्डा भित्तरसे कफ्र्यू लागल बा । पता नै हो ? कहिके जवाफ देहथ् । प्रहरी अक्क न बक्क ।

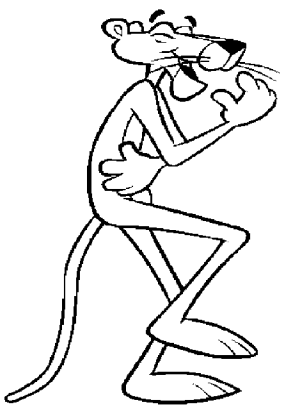

एकदिन भारतके प्रधानमन्त्रीहे बराजोरसे अंग्रेजी सिख्नास लग्लीस। एक्थो अंग्रेजी जन्नाहा मनैयकथे ऊ अंग्रेजी सिखे चलदेहल । मनैया उहीहे 'ए' का मतलब रश्मिकी एप्पल, 'बी' का मतलब रश्मिकी बनाना ओ 'एम' के मतलब रश्मीकी मा, कहिके सिखादेथिस् । दोसर दिन ओकर संघरिया प्रधानमन्त्रीसे अंग्रेजी जन्ले कहिके पुछथिस् तव ऊ कहत् हाँ । ओकर संघरिया डब्लु लिखके पुछथीस् । यकर मतलब का हो ? तव प्रधानमन्त्री कहथ् - अरे ये तो रश्मिकी मा है लेकिन उलत कैसे गया ?

एक्थो मनैया अन्ध्वाइल प्रहरी चौकीओर जाइथ् । डगरामे ओकर संघरिया भेट होजिथिस् । संघरिया उहीसे पुछ्थिस । कहाँ दनदन दनदन जाइती ? तव ऊ मनैया कहथ् - हमार घरम् चोर पेलगिल बा । मै थानामे प्रहरीनहे बलाई जाइतुँ । ओकर बात सुनके संघरिया फेन पुछथिस् । भौजीहे कहाँ छोर्ली त ? भौजी चोरूवाहे आपन बाँहोमे पकरके रख्ले बा । तवमारे मै हालीहाली प्रहरीनहे बलाई जाइतुँ । मही जाइदी नै त ऊ भागजाई । ओकर बात सुनके मनैया अचम्म .....।

एक्थो जवान लौण्डा एक्थो मनैयक छाईहे मनपराके ओकर घरे मागे जाईत् । ऊ लौण्डा लौण्डीक् बाबासे कहथ्- महिन आपन छाई दैदेबो कलसे त्वहार छाईक् वजन बरावरके सोन मै तुहिन तौलदेम । ओकर बात सुनके लौण्डीक् बाबा महिहे कुछ समय देऊ कहिके समय मागथ् । लौण्डा हतपतसे बोलमारथ् । कैसिन समय ? सोचक लाग । ओकर बात सुनके लौण्डीक् बाबा कहथ् - नाहीं सोचक लाग नै आपन छाईक बजन बह्वाइक लाग । ऊ लौण्डा खिस्स परजाईथ् ।

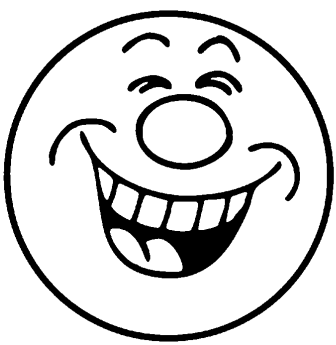

एक्थो गाउँले मनैया रहथ् । ऊ पाँच सालसम भारतके बम्बइमे लाहुर कमाई गैल रहथ् । लाहुरके सिलसिलामे उहीहे खतरनाक रोग एड्स लागल रथिस् । ऊ बम्बइसे नेपाल आपन घर आईथ् । घरे आइथ् त रेडियोमे 'कण्डम लगाऊ एड्स भगाउ' कना सन्देश बारम्बार सुनत् ।

आपन रोगके बारेमे घरक् मनैनहेफे बतैले नैरहथ् । अपनहँ उपचार करेजाईथ् । अपनहँ मनमे धर्ले रहथ् । जब ऊ रेडियोसे सन्देश सुनथ् तवसे ऊ उपचार करे छोर देहथ् । सद्दभर रातदिन कण्डम लगाके बैठत् । एकदिन ओकर जनेवा कण्डम लगाइल देख लेथिस् । तव पुछ्थीस् का करे कण्डम लगाके बैठल बातो ? तव ऊ मनैया आपन जात्तीक बात खोल्ना बाध्य होजाईथ् । ऊ आपन जनेवाहे कहथ् - महि एडस् रोग लागल बा । एड्स रोग ठीक करकलाग चौविसे घण्टा कण्डम लगाके बैठल रथुँ । ओकर जनेवा हाँसी रोके नैसेक्थिस् ।

एक्थो व्यापारी नाङ्गर भिखारी हे पैसा देती कहथ् - यदि तुँ आँधर रतो कलसे आउर धिउर पैसा देतुँ । हुँकार बात सुनके भिखारी कहथ् - हजुर आन्धर बनके फे हेर सेक्नु । नै चल्ना पैसाकिल हात लग्लक् कारण वाक्क होके नाङ्गर बने परल हजुर । व्यापारी अचम्म !

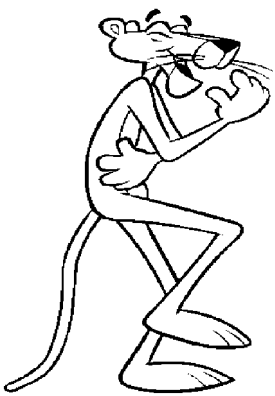

एक्थो नेताहे भाषण करत् सुनके एक्थो कुक्राहे अचम्म लग्थीस् । मन थाम्हे नैसेकके ऊ आपन संघरियाहे कहथ् - हेरी त संघारी । अत्रा घचिक अक्के मनैया भुँकता । बाँकी सब चिमचाम हेरतैं । तब दोसर कुक्रक् संघरिया कहथ् कैसिन अचम्म ना ! हम्रे त एकजाने भुँक्तीकि सक्कुजाने भुँके लग्थी । मने यी मनै त चिमचाम बातैं ।

दुईथो संघरियनकेबीच विहानके हाली उठ्ना बारेमे बातचित चल्थिन् । सरिता आपन संघरिया कविताहे पुछ्थी ऐ सखी ! भिन्सारके कै बजे उठ्थो होई ?

कविता : जब दिनके केरनी मोकामे आइथ् तव उत्थुँ । तुँ कैबजे उत्थो ?

सरिता : वाह ! कत्रा विहान्ने उत्थो यार तुँ । मने मोर कोठामे दिनक् केर्नी नै लागथ् । मै विन दिन उठ्ले उत्थुँ ।

एक्थो जनेवा हाटबजारमे टिना बेचे गैलरथी । टिना खोज्ती एक्थो कुइरे हाटबजारमे आके हुँकारथे टिना किने खोजत् । आलु देखके ऊ ह्वाट इज दिस ? कहथ् । जनेवा कवाजिथी । फेन कुइरे ओहे शब्द दोहऱ्याके टिना किने खोजत् । जनेवा कुछु विन बुझ्ले झोक्काके कहथि - का कहता का नै कोह्रिया, मै बाते नै बुझथुँ । तव कुइरे कहथ् - आई एम नट कोरियन । आई एम अमेरिकन । जन्नी भकभक हेर्ती रहिजिथी ।

एक्थो लावा जोडी भख्खर भोज कर्ले रथैं । उहीनहे हनिमुन मनैना सौख लग्थिन् । हनिमुनके लाग विदेश जैना सल्लाह कर्थे । जनेवा पढल लिखल नै रहथि । थरूवाभर पढल रहथ् । विदेशमे जाब त कोई पुँछी कलसे तुँ कहहो - यी मोर हसबेन्ड हुईँत । मै हुँकार वाईफ कहिके । ओइने विदेश जैथैं हनिमुन मनाई । विदेशके एक एयरपोर्टमे चेक करेबेर गार्ड जनेवासे पुछथि । यी त्वहार के हो कहिके ? तव जनेवा उत्तर देथी -यी मोर ह्याण्डल हुईत् । मै हुँकार पाइप । गार्ड त कुछ बुझ्बे नै करत् । कवाईहस कर्ती ओइनहे जाऊ जाऊ कहिदेहथ् ।

एक्थो लौण्डा बरा सटपटाहा रहथ् । विहान्ने घरसे निक्रना ओ एहोर ओहोर नेङ्ना काम करथ् । खाईभर घरे आइथ् । फे सट्टसे बाहर निकर जाइथ् । ओकर आनी बानी देखके ओकर दादु परिसान होजिथिस् । काम धन्दा नैकर्ना खाइभर आजिना । दादुहे ठीक नै लग्थीस् । तब ओकर दादु कहथिस् -

दादु : ए कान्छा ! तैं कबसम बैठ बैठके खैबे ? कुछु त काम करे परल ।

दादुक प्रश्न सुनके भैया कहथ्-

कान्छा : अरे दादु ! बैठके नैखैम त का छोट लर्काहस उठ् उठ् भात खैम ?

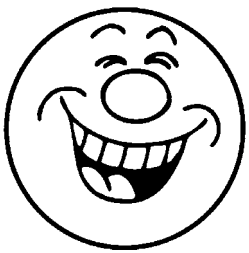

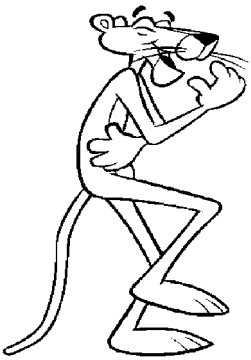

कक्षा कोठामे मस्तर्वा नेपाली विषय पढाई दँतल रहथ् । विद्यार्थीहुत्रे खोब ध्यान देके सुनल देखके ऊ फे मख्ख रहथ् । ओहेबेला उहीहे प्रश्न कर्ना मन लग्थिस् ।

मस्तर्वा : सुन्दर ! कहो त, काल कै प्रकारके रहथ् ?

सुन्दर : तीन प्रकारके सर ।

मस्तर्वा : का का हो तीन प्रकारके ?

सुन्दर : सर ! काल्ह मै अपनेक छाइहे देख्ले रहुँ । आज मै उहीनहे मन परैथुँ । परौं मै उहीनहे भगाके लैजिम् ।

मस्तर्वा अक्क न बक्क ।

एक्थो लौण्डीक् दाई बरा विमार रथिन् । हतपत् हतपत् लग्गेक अस्पतालमे लेके जैथी । अस्पताल पुगलबेला ऊ डक्टर्वासे कथी

लौण्डी: डाक्टर साव ! चेकअप करेपर्ना बा ।

डाक्टर: ए ठीक बा । कप्रा खोली ओ ऊ बेडमे सुती ।

लौण्डी: (रिसैती) मोर नै, मोर मम्मीके चेकअप कर्ना बा ।

डाक्टर : ठीक बा त दाईक कप्रा खोलके सुताऊ ।

लौण्डी : (गोर झट्कती) तोर कप्रा तहीं खोल कहिके दाईहे ओहाँसे लेके चलदेथी ।

डाक्टर साव अचम्म !

कृपारामके जनेवाहे कम्मर दुख्ना विमार रथिन् । एक वर्ष होगिल ओकर जनेवा जबफे कम्मर बथाइता कहिके काम कृपारामहे करैथिन् । एकदिन चेकअप करे लैजाइपरल कहिके ऊ आपन जनेवाहे अस्पताल लेके जैथैं । डगरीम् ओकर संघरिया तुला भेट हुइथिन् । जनेवक् विमार बारेमे उहीनहे बताके ऊ अस्पताल पुगथै । चेकअप पाछे औषधि किनके ऊ घरे घुमथै ।

तुला : (एक हप्ता पाछे) कृपाराम अपनेक जनेवक कम्मर दुख्ना रोग ठीक हुइलिन् ?

कृपाराम : जौनदिन डाक्टर साव 'कम्मर दुख्ना बुह्रैनाके संकेत हो' कहलैं ऊ दिनसे त जनेवक कम्मर दुख्ना रोग चट् ।

तुला पर्ली अचम्म ।

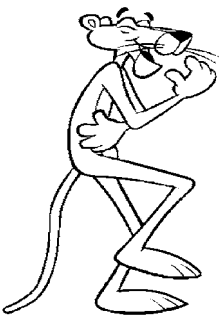

सबनमके छावा अनुपम कक्षा नौ मे मढत् । पढाईमे लौण्डा खासे तगडा नैरहथ् । ओकर हैण्ड राइटिङ् त झन खराव रथिस् । एकदिन ओकर बाबा सबनम रिजल्ट लेहे विद्यालय गैल रथैं । ऊ बेला मस्तर्वासे गफ हुइथिन् ।

मस्तर्वाः अपनेक छावा त डाक्टर बन्ना हस् बा हजुर ।

सबनम : (एकदम खुशी हुइती) काजे माष्टरसाब ? पढाईमे तगडा बा ?

मस्तर्वाः नाई, अपनेक् छावक् हैण्ड राइटिङ् एकदम खराव बातिस् । का लिखत् कापी जाँचेबेर कर्रा परथ् ।

सबनम् अक्क न बक्क ।

तीनजाने गफाडीहुक्रे खोब गफ चुट्तहैं । आपनहे सबसे आघे ओ उप्पर देखैना होडबाजी रहिन् ओइनके बीचमे ।

पहिला गफाडीः संघारी हुक्रे मै त १५ कक्षा पास कर्ले बातुँ । ओकर बात सुनके दुसरा ओ तिसरा गफाडी अचम्म मन्ती कानेखुसी शुरू कर्थै ।

दुसरा ओ तिसरा : कहिया ओ कैसिक पढ्ली १५ कक्षा ?

पहिला गफाडीः १० कक्षामे ५ वरष फेल हुइनु ।

दुसरा गफाडी : अपने त १५ कक्षा किल पढल बाती । मै १६ कक्षा पढ्ले बातुँ । अचम्म मन्ती पहिला ओ तिसरा फेन जिज्ञासा रख्थैं

पहिला ओ तिसरा : कहाँ पढ्ली हो १६ कक्षा ? कहिया पढ्ली ?

दुसरा गफाडी : भारतके लखनऊ मे जाके कक्षा १० भारूमे पास कर्नु । भारतके १० कक्षा पास नेपालके १६ कक्षा नै हुइल त ?

पहिला ओ तिसरा गफाडी छक्क ।

दुईजने भइया हरि ओ श्यामके कामसे दिदी सीता बहुत दिक्क रथी । घरक् सक्कु सामान अव्यवस्थित तरिकासे ढरल देखके ऊ दिक्काइल रथी । किताव कापीक् पाना सब चिंठके कोठाभर फैलेले रथैं । किताव रख्ना टेबल टुटैले रथैं । किताव बोक्ना झोला ओ चयन सब चिंठचाँठ पर्ले रथैं । ओइनके चिँठल सामान तङ्गरके सीता मिच्छाइल रथी ।

स्कूलसे बरा खुशी हुइती घरे आके दुनु भैया कहथैं -

हरि ओ श्याम : दिदी ! आज हम्रे बहुत खुशी बाती । आज खेलकुदमे हम्रे स्कूलके रेकर्ड तोड्देली ।

सीता : (दिक्कैती) तुहनके काम त सब ठाउँमे बिगर्ना किल त हो । घरक समान तोरके चित्त नैबुझल ? स्कूलमे जाके फेन रेकर्ड तोरदेलो, नथ्याहिन् ! तुहरे औरे काम जन्ले का बातो ?

हरि ओ श्याम अचम्म ।

एक्थो युवक आपनहे बरा अभागी मानथ् । सक्कुहुन हात हेराइथ् देखके उहीफे ज्योतिषी कहाँ जाके हात हेरैना मन लग्थिस् । ऊ भात खाके सरासर ज्योतिषीक् घर जाइथ् ।

युवक : गुरूजी मोर हात हेरदेहे परल । आपन दाहिन हाँत देखैती कहथ् । मोर दाहिन हात खोब खुन्जियाइथ् ।

ज्योतिषी : अपने बहुत भाग्यमानी बाती भाइ । अपनेक हात हेरके पता चलथ्, अपने जीवनमे खोब पैसा कमैबी ।

युवक : मोर बाउँ हातफे खुन्जियाइथ् गुरूजी ।

ज्योतिषी : तवते अपनेक विदेश यात्रा हुइना संकेत देखपरथ् ।

युवक : मोर चुत्तरफे खोब खुन्जियाइथ् गुरूजी ।

ज्योतिषी : (रिसैती)- हत्तेरी भाइ ! अपनेकमे खुन्जली बा कि का ?

युवक अक्क न बक्क ।

दुईजाने मनरख्नी ओ मनरख्ना एकापसमे खोब प्रेम कर्थै । यहोंर ओहोंर घुमे जैथैं । आइसक्रिम, कोक, बियर पिथैं । सिनेमा हेर्थैं । प्रेमी हरिकंगाल होजाइथ् । विस्तारे ऊ चुरोट पिए छोरत् । बियर पिए छोरत् । हुइती हुइती खाजा, नास्टाफे कम कम खाइ लागत् । ऊ देखके ओकर प्रेमिका पुछ्थिस् –

प्रेमिका : हमार मायाँ कत्रा गाढा होगिल ना प्रिय ? मोर मायाकेकारण त्वहार बानीव्यहोरा सुध्रे लागल ।

प्रेमी : खै का बानी सुध्रल कहुँ ? मही त ओइसिन नै लागथ् ।

प्रेमिका : हेरो ना । तुँ चुरोट, जाँर, खैनी सबचिज खाई छोरदेलो । यी सब मोर मायाके करामत त हो ।

प्रेमी : त्वहार मायाके करामत नै हो । बल्की मोर गोभ्रुमे पैसा ओराके हो ।

प्रेमिका अक्क न बक्क ।

धनीराम ओ मनीराम पहिला फेरा अमेरिका गैल रथैं । विहानके मर्निङ्वाक मे निक्रथैं । ओइनहे शितरी बयालके झोंक्का लग्थिन् । जार लागल कहती लग्गेक् रेष्टुरेन्टमे कफी खाई जैथैं ।

धनीराम : (मेनु हेर्ती), कौन कफी पीबी मनिराम ? हट कफी कि कोल्ड कफी ?

मनीराम : अत्रा जारमे कोल्ड कफी के पियी हो ? हट कफी अर्डर करी । ओइने कफी अर्डर कर्थैं । एक घचीक्मे कफी आइथ् ।

धनीराम : ली हाली पियी, कफी कोल्ड होजाई ।

मनिराम : हतार का बा हो, आरामसे पियी ।

धनीराम : नाइ नाई । हाली पियी नै त दण्डमे पर्बी ।

मनिराम : (अचम्म मन्ती) कैसिन दण्ड हो ?

धनीराम : मेनुमे नै देख्ली । हट कफी एक डलर ओ कोल्ड कफीके तीन डलर लिखल बा ।

धनीरामके बात सुनके मनिराम अचम्म ।

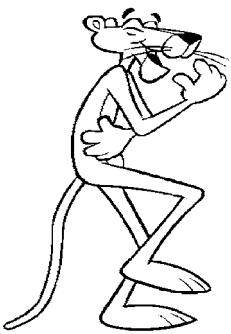

एक्थो साप्ताहिक पत्रिकामे समाचार छापल रहे । "नेपालके ५० प्रतिशत नेतालोग भ्रष्टाचारी बातैं ।" पत्रिका बजारमे का पुगल रहे, नेतालोग फोन करके सम्पादकहे धम्क्याइ लग्लैं । सम्पादकफे का कम । तुहरे भ्रष्टाचार कर्थो, हम्रे समाचार लिख्थी कहिदेहथ् । नेतालोग सम्पादकहे समाचार सच्यैना दवाव देथैं । समाचार नै सच्यैबे त ज्यानसे मारदेव कहिके उहीहे धम्की देथैं । तब सम्पादक समाचार सच्याके दोसर अंकमे प्रकाशित करथ् "नेपालके ५० प्रतिशत नेतालोग भ्रष्टाचारी नै हुइँथ् ।"

गोविन्द पढाईमे एकदम कमजोर रहथ् । कक्षा ८ मे पाँच वरष फेल हुइल रहथ् । एकदिन ओकर मस्तर्वा गिज्यैती कथिस् -

मस्तर्वाः गोविन्द ! तुहिनहे लाज नैलागथ्, अक्के कक्षामे पाँच वरष बढेबेर ? (मस्तर्वक् प्रश्नके जवाफमे गोविन्द कहथ् -)

गोविन्द : मास्तरसाव ! अपनेहेफे लाज नैलागथ्, अक्के कक्षामे २० वरष पढाईबेरफे ?

मस्तर्वा अक्क न बक्क ।

सुरेश भोज करेबरे आपन ससुर्वासे एक्थो वाचा कर्ले रहे "मै अपनेक छाइक् पेट कबु खाली नै हुइदेम ।" दमाद् बरा होसियार बातैं । मोर छाईक बरा ख्याल रख्छीं, कहिके ओकर ससुर्वा खुशी रथैं । १० वरषपाछे सुरेश आपन ससरार छिन्दिरविन्दिर १० थो लर्का लेके जन्नीक्सँग पहुनी खाइ जाइथ् । बरा धिउर लर्का देखके सुरेशके ससुर्वा खाइबेर कोन्टीमे पुछ्थैं -

ससुर्वाः दमाद साहेब ! अत्रा धिउर सन्तान काहे बनैली ? पल्ना, बह्नैना कर्रा परी काहुँ ?

सुरेशः ससुर साहेब ! मै अपनेसे बाचाजो कर्ले रहुँ । अपनेक छाइक् पेट कबु खाली नै हुइदेम कहिके ।

सुरेशके राउत (ससुरा) अक्क न बक्क ।

एकदिन केरा, कागती ओ आमके झग्रा पर्थिन् । तीनुजाने आपन माग धेउर रहल दावी कर्थैं । केरा कहथ् महिनहे धिउर मनै रूचैथैं । कागती कहथ् महिहे रूचैथैं । झग्रा बढ्के सीमा नघ्ती जाइथ् । ओइनके बात सुनके आम कहथ् "तुहिनके का डिमान्ड बा मोर हेरो ।" ओकर बात सुनके केरा कहथ् -

केराः अरे तोर का डिमान्ड बा ? तोर त गुज्झा खाके गुस्ली फेंक देथैं ।

कागतीः तोर का डिमान्ड बा रे आम ? तुहीं त मनै ढेला मार-मार गिरैथैं ।

आमः अरे तोर का डिमान्ड बा रे केरा ? तुही त झन मनै नङ्गा पारके फेंक्थैं ।

आम : अरे तोर का डिमान्ड बा रे कागती ? तुही त मनै निचोर निचोर लब्दैथैं ।

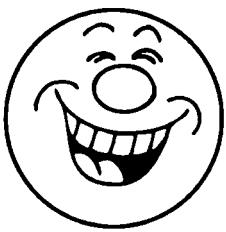

श्याम विज्ञान विषयमे बहुत कमजोर रहथ् । हरेक टेष्ट परीक्षामे 'आलु' नम्बर लानथ् । ऊ हैरान होके एकदिन आपन मिसहे कहथ् -

श्यामः मिस ! अपने यिहीसे आघेक् जनममे मुर्घनिया जनम पैले रथी ना ?

मिसः (रिसैती) काहे ? मोरमे का बा ओइसिन ?

श्यामः महिन हरेक जाँचमे 'अण्डा' नम्बर देथी ना, तबमारे ।

श्यामके बात सुनके मिस अक्क न बक्क ।

प्रेमी ओ प्रमिका एक आपसमे बहुत माया कर्थै । एक दोसरहे समय मिलाके भेटथैं ओ मीठ मीठ बात बत्वैथैं । एकदिन प्रेमिका आपन प्रेमीहे पुछ्थी -

प्रेमिकाः सबनम् ! बताउ त माया कलक का हो ?

प्रेमीः माया स्वर्गके द्वार हो । माया समुन्दरके छाल हो । माया आगी हो ।

प्रेमिकाः सबनमके बात सुनके हडबडैती कथी- तब त मै तुहिनसे माया नै करम ।

प्रेमीः काहे ? का हुइल ?

प्रेमिकाः महिन् अब्बेहे स्वर्गमे जैना रहर नै हो । महीन् समुन्दरमे डुवके मुना नै हो । मही आगीमे जर्ना रहर नै हो ।

प्रेमिकाके बात सुनके प्रेमी अक्क न बक्क ।

कुछ गैरथारू जनसंख्याके फारम भरे रानाथारू गाउँक् घरमे पुगथैं । घरेम एक्थो लौण्डीकिल रथी । मनैन घरम् आइल देखके ऊ का काम बा ? कहिके पुछथी । फारम भरूइया मनै जनसंख्याके बारेमे लिखे आइल बाती कहथैं । आपन दाई बाबाहे बलाउ कहिके ओइने कथैं । राना थारू भाषामे दाई हे 'अइया' कथैं ।

लौण्डी: 'अइया' 'अइया' कहिके टोंटफारे चिल्लाइथ् ।

फारम भरूयन् : का करे अइया कहते ? हम्रे त तुही कुछु नै करैले हुई ?

लौण्डी: झन जोरके चिल्लाइथ् ओ 'अइया' 'अइया' कहथ् ।

फारम भरूइयन् डरके मारे 'टाप होजिथैं ।'

राम ओ श्याम विद्यालय पढे जाइतहैं । ओहे बेला झरझर झरझर पानी वर्षे लागथ् । ओइने डगरीम रहल् एक्थो घरक् ओंरयाति तरे बँचे लग्थैं । पानी झन झन बढ्ती जाइथ् । बद्री गरगराई लागथ् ओ चम्के लागथ् । करियाकुचिल बद्रीमे झल्झल् झल्झल् बद्री चम्कथ् । ओहे बेला राम श्यासे प्रश्न पुछथ्

रामः श्याम पानी परेबेर बद्री काहे चम्कथ् ?

श्यामः काकरे चम्की रे । पानी परेबेर भगनवा उप्परसे हेरथ् । कहाँ कहाँ पानी परता कहिके ।

राम : का भगनवक् आँखी महा देख्नाहा रथिस् ? ओत्रा उप्परसे देखलेहथ् ।

श्यामः हाँ, पानी नै परल ठाउँमे पानी पारक्लाग बत्ती बारबार हेरथ् ।

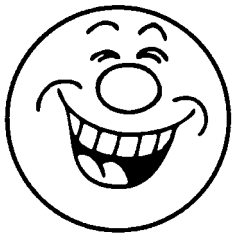

एकदिन थरूवा आपन जन्नी ओ छावाहे लेके बजार किनमेलमे निक्रथ् । जेठके महिना रहथ । बरा गर्मी लग्थीन् त ओइने डग्रीमे बेचे राखल आइसक्रिम खैना सोच बनैथैं । आइसक्रिम खैती खैती आइनके छावा लौण्डा हातम्से गिरा मारथ् । आइसक्रिम धुरेम् लेटजाइथ् । लौण्डाहे आइसक्रिम उठाइ जाइत् देखके ओकर दाई कथिस्

दाईः गिरल चिजहे ना उठा छावा, मै दोसर आइसक्रिम किनदेम ।

नेङ्ती नेङ्ती उसितके लौण्डक बाबा दौंकसे गिरपर्थीस् । दाईहे उठाइ जाइत् देखके लौण्डा कहथ्-

लौण्डाः गिरल बाबाहे ना उठा दाई, मै दोसर बाबा किनदेम ।

लौण्डक दाई पर्थी अचम्म !

तीनथो लर्का स्कूल जाईबेर गफमे भुलल रथैं । आपन बाबाहे आघे देखाइकलाग ओइनके प्रतिस्पर्धा रथिन् ।

पहिलाः यार तुहिन पता बा । मोर बाबा खेतुवा जोतथ् ते धर्ती फाटजाइथ ।

दुसराः तोर बाबा त धर्ती किल फटाइथ् । मोर बाबा प्लेन चलाइथ् त बद्री फाटजाइथ् ।

तिसराः हत्तेरी । तुन्हँक बाबन का काम कर्थे ? मोर बाबा पादत त कट्टु फारदेहथ् ।

तिनु लर्का पेट थामथाम हँस्थैं ।

मस्तर्वा कक्षामे पढाइ दँतल रहथ् । मेहनत, परिश्रम, इमान्दारिताके काममे सफलता मिल्ना सन्देश विद्यार्थीनहे देहथ् । लप्पन छप्पन, दयाँबायाँ नै कर्ना मनै जीवनमे बरा सफलता हात पर्ना सिखाईथ् । चोरीके फल कबुफे मीठ नैरहना ओ प्रतिफल गलत अइना बताइथ् । मस्तर्वा पढैती रहल बेला जुरूक्कसे गोविन्द उठत् ओ कहथ्-

गोविन्दः सर ! आज विहानके स्कूल आइबेर मै बर्कान् बारीम्से पाकल अमरूट टुरके खैनु । बरा मीठ रहे त ?

मस्तर्वा परथ् अचम्म !

सन्दर्भ सामग्रीः

१) साप्ताहिक, पहुरा २०५९ चैत । थारू साप्ताहिक पत्रिका, धनगढी ।

२) अर्धसाप्ताहिक, हमार पहुरा २०६३ वैशाख । थारू अर्धसाप्ताहिक पत्रिका, धनगढी ।

३) दैनिक, हमार पहुरा २०६४ साउन । थारू दैनिक पत्रिका धनगढी ।

४) बस्ताकोटी, हरिकृष्ण । हँसाउने चुट्किला, एस.पी. प्रकाशन २०६८ ।

५) शाह, दिपेन्द्र । जोक्स लफिङ, एस.पी. प्रकाशन ।

६) अनलाइन, इन्टरनेट विभिन्न साइट ।

७) विभिन्न थारू पुस्तक, मासिक, अर्धमासिक तथा वार्षिक पत्रपत्रिका आदि ।